❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

आषाढ़-श्रावणमासः, विक्रमसंवत्-२०७५ / जुलाईमासः-२०१८, सृष्टिसम्वत्-१,९६,०८,५३,११९

वर्षम् - १० :: अङ्कः - १२१ मूल्यम्- रु. ५ प्रति, वार्षिकम्-५०

❖संरक्षका:❖

स्वामी प्रणवानन्दः सरस्वती

कै. रुद्रसेन आर्यः

प्रो.पीयूषकान्तदीक्षितवर्याः

श्रीगिरीश-अवस्थीवर्याः

❖परामर्शदातृमण्डलम्❖

डॉ. रघुवीरवेदालङ्कारः

प्रो. महावीरः

आचार्ययज्ञवीरवर्याः

श्रीचन्द्रभूषणशास्त्री

❖मुख्यसम्पादकौ❖

डॉ. धनञ्जय आर्यः

रवीन्द्रकुमारः

❖कार्यकारी सम्पादकः❖

ब्र. शिवदेवार्यः

❖व्यवस्थापकाः❖

ब्र. अनुदीपार्यः

ब्र. कैलाशार्यः

❖कार्यालयः❖

श्रीमद्दयानन्द-आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम्

दूनवाटिका-२, पौंधा,

देहरादूनम् (उत्तराखण्डः)

दूरवाणी - ०९४१११०६१०४,८८१०००५०९६

website: www.pranwanand.org

E-mail : arsh.jyoti@yahoo.in

विषय-क्रमणिका

विषयः **पृष्ठः**

श्रीमद्दयानन्द-आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल पौन्धा, देहरादून का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न, जिसकी प्रस्तुति

आदरणीय मनमोहन आर्य जी

के द्वारा आपके समक्ष उपस्थित है।

-कार्यकारी सम्पादक

नीमीतीरे सततसुखदे सर्वतो दर्शनीयम्,
पौन्धाग्रामे नगरनिनदाद् दूरमीक्ष्यं मनुष्यैः।
हैमे तुङ्गे शिखरिशिखरे शोभनोपत्यकायाम्,
आर्षज्योतिर्मठगुरुकुलं राजते संसृतौ मे।। **-रवीन्द्रकुमारः**

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशनतिथि-३ जुलाई २०१८ :: डाकप्रेषणतिथि-८ जुलाई २०१८

सम्पादक की कलम से...

आभार

श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौंधा-देहरादून ने आप सभी सहयोगियों के सहयोग से अट्ठारह वां तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक १ जून से ३ जून, २०१८ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस गुरुकुल ने अपने अनेक कार्यों व सफलताओं से न केवल देहरादून नगर में ही ख्याति अर्जित की है अपितु देश-विदेश में सर्वत्र प्रतिष्ठिता को प्राप्त किया है। गुरुकुल का मुख्य उद्देश्य वही है जो महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में ब्रह्मचारियों की शिक्षा-दीक्षा का उल्लेख करते हुए कहा गया है। ब्रह्मचारियों की वेद व शास्त्र अनुमोदित शिक्षा की दृष्टि से गुरुकुल पौन्धा ने विगत १८ वर्ष की अवधि में अनेक योग्य ब्रह्मचारी देश व समाज को प्रदान किये हैं, जो अनेक स्थानों पर अपनी अर्जित विद्या का उपयोग करते हुए देश और समाज की सेवा कर रहे हैं। शिक्षा का कार्य एक सतत व निरन्तरता को लिये हुए उद्देश्य को सम्मुख रखकर कार्य करना होता है, जिससे वैदिक धर्म व संस्कृति के न केवल रक्षक अपितु इसका दिग-दिगन्त प्रचार व प्रसार करने वाले विद्वान् व प्रचारक तैयार किये जा सकें। जो ब्रह्मचारी गुरुकुल में अध्ययनरत हैं वा जो अपनी शिक्षा पूर्ण कर गुरुकुल से जा चुके हैं, वह ऋषि ऋण, गुरुकुल व आर्यसमाज के ऋण को ध्यान में रखते हुए उससे उऋण होने के लिए सावधान रहकर अपनी परिस्थितियों के अनुसार किसी न किसी प्रकार यथासम्भव वा अधिकतम वेद प्रचार का कार्य करने का प्रयास करते हैं। उनका यह कार्य न केवल उनकी बौद्धिक उन्नति करने के साथ उन्हें यश प्रदान करता है अपितु इससे देश व समाज को भी लाभ होता है।

देहरादून में इस गुरुकुल की स्थापना आर्यजगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने आर्य-स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के सुपुत्र श्रीकान्त वर्म्मा जी द्वारा दान में दी गई भूमि पर १८ वर्ष पूर्व ४ जून २००० की थी। तब से अब तक यह गुरुकुल प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस अवधि में गुरुकुल में न केवल आवश्यकता के अनुसार छात्रावास, अध्ययन कक्ष, आचार्य निवास कक्ष, अतिथि कक्ष व सभागार आदि का निर्माण ही हुआ अपितु ब्रह्मचारियों की संख्या भी निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हुई है। गुरुकुल की सफलता का अनुमान इसी बात से ही लगाया जा सकता है कि हम गुरुकुल में प्रवेश चाहने वाले सभी बच्चों को साधनों की सीमितता के कारण प्रवेश नहीं दे पाते। प्रतिवर्ष लगभग २०० से अधिक विद्यार्थी प्रवेशार्थ प्रवेशपरीक्षा में बैठते हैं। इस समय लगभग एक सौ पच्चीस ब्रह्मचारी गुरुकुल में शिक्षारत है जो न केवल संस्कृत (आर्ष व्याकरण) की ही शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं अपितु अन्य विषयों का भी ज्ञान प्राप्त कर रह हैं जो उनकी शिक्षा पूरी होने के बाद उन्हें समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करायेगा। आर्ष व्याकरण आदि की शिक्षा के साथ ही बच्चों को वेद और आर्यसमाज विषयक सभी विषयों का ज्ञान भी कराया जाता है। ब्रह्मचारी सन्ध्या व हवन में सम्मिलित होकर पूर्ण वैदिक रीति से जीवन यापन करते हैं। शिक्षा के साथ ही विद्यार्थी व्यायाम, जूडो-कराटे, शूटिंग (निशानेबाजी), वाद-विवाद सहित अनेक क्रीड़ाओं आदि में भी प्रवीण व अग्रणीय हैं। इनकी प्रतिभा व योग्यता के दर्शन गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में आने वाले धर्म एवं गुरुकुल प्रेमीजन सभी कार्यक्रमों को देखकर करते हैं और उन्हें लगता है कि यहाँ के विद्यार्थियों को जो अभ्यास कराया गया है वैसी शिक्षा व अभ्यास अन्य शिक्षण संस्थानों में शायद ही कराया जाता हो। अतः गुरुकुल पौन्धा वैदिक धर्मी आर्यजनों का प्रिय

गुरुकुल बन गया है। इस गुरुकुल का यह भी सौभाग्य है कि आर्यजगत् के प्रायः सभी विद्वान् व नेता समय-समय पर गुरुकुल में पधारते रहते हैं और गुरुकुल की गतिविधियों को देखकर प्रसन्न व सन्तुष्ट होने के साथ इसकी प्रशंसा भी करते है। इस गुरुकुल का परम सौभाग्य है कि स्वर्गीय पं. राजवीर शास्त्री, स्वर्गीय पं. भीमसेन वेदवागीश, आचार्य युधिष्ठिर उप्रैती आदि जैसे आर्यसमाज के दिग्गज विद्वानों ने समय-समय पर यहाँ आकर ब्रह्मचारियों की पठन-पाठन प्रणाली को गति प्रदान की है। वर्तमान में गुरुकुल झज्जर के पूर्व स्नातक व स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शिष्य आचार्य यज्ञवीर जी ब्रह्मचारियों को शिक्षित करने में अपनी सेवायें दे रहे हैं जिससे यह गुरुकुल प्रगति के पथ पर अग्रगामी हैं।

इस बार आयोजित गुरुकुल का वार्षिकोत्सव पूर्व उत्सवों की परम्परा में मील का पत्थर सिद्ध हुआ है। आर्यजगत् के सभी विद्वानों व भजनोपदशकों का पूर्ण सहयोग इस गुरुकुल को प्राप्त हुआ। सभी विद्वान् व भजनोपदेशक वार्षिकोत्सव पर स्वात्म प्रेरणा से पधारते हैं व गुरुकुल को सहयोग देते हैं जिससे इस वार्षिकोत्सव का स्वरूप अन्य संस्थाओं के उत्सवों से कुछ अधिक ही प्रभावशाली अनुभव होता है।

इस गुरुकुल की उन्नति में सर्वाधिक सहयोग पूज्य गुरुवर्य आचार्य डॉ. धनञ्जय जी का है। जब आचार्य धनञ्जय जी २१ वर्ष के थे तब स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रिय शिष्य को गुरु दीक्षा के रूप में देहरादून के गुरुकुल संचालनार्थ आदेशित किया। अपने गुरुवर्य के आदेश को अपने लिए अमृत रूप स्वीकार कर आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर गुरुकुल का आरम्भ किया। पाँच विद्यार्थियों के साथ आचार्य डॉ. धनञ्जय जी ने एक फूस की कुटिया से इस गुरुकुल का आरम्भ किया। आज जो गुरुकुल पौन्धा उन्नति के पथ का अनुगामी हो रहा है, उसमें आचार्य डॉ. धनंजय जी का तपोमय जीवन लगा हुआ है।

आपका यह गुरुकुल आपके तन-मन व धन के सहयोग से निरन्तर प्रगति पर अग्रसर है। आपके सर्वात्मना सहयोग के लिए हम आपके हृदय से आभारी हैं। इसके लिए हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आप सभी गुरुकुल प्रेमियों, जिन्होंने वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होकर हमारा उत्साह बढ़ाया, धन्यवाद करते हैं। हम अपने उन बन्धुओं के भी समान रूप से आभारी एवं कृतज्ञ हैं जो किसी कारण भौतिक रूप से उत्सव में सम्मिलित नहीं हो सके परन्तु जिनकी भावनायें व प्रेरणायें इस गुरुकुल की उन्नति से जुड़ी हुई हैं। आप सभी के मनसा, वाचा, कर्मणा सहयोग के लिए भी हम आपका भूरिशः हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

एक बार हम पुनः समस्त गुरुकुल प्रेमियों व सहयोगियों का हृदय से आभार व धन्यवाद करते हैं और आशा करते हैं कि आपका प्रेम व सहयोग गुरुकुल के प्रति भविष्य में भी बना रहेगा जिससे यह गुरुकुल धर्म व संस्कृति की रक्षा सहित वेद प्रचार के क्षेत्र में आपके सहयोग व भागीदारी से अपना योगदान कर सके। गुरुकुल प्रेमी सभी विद्वानों, नेताओं व भजनोपदेशकों का भी हार्दिक धन्यवाद है। साथ ही विशेष आभार आदरणीय मनमोहन कुमार आर्य जी का, जिन्होंने गुरुकुल के वार्षिकोत्सव की रिर्पोटिंग कर आप सभी पाठकों तक वार्षिकोत्सव का सम्पूर्ण इतिवृत्त पहुँचाने में अविस्मरणीय परिश्रम किया है।

- शिवदेव आर्य

मो.- ८८१०००५०९६

Youtube पर घर बैठे सम्पूर्ण कार्यक्रम देख सकते हैं

श्रीमद्दयानन्द-आर्षज्योतिर्मठ-गुरुकुल पौन्धा देहरादून के वार्षिकोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम को अब आप अपने घर पर परिवार के साथ बैठ कर Youtube पर सीधे देख सकते हैं। Youtube पर जा कर Gurukul Poundha Dehradun लिखकर Search करने पर सम्पूर्ण कार्यक्रम HD Quality की Videos देख सकते हैं। गुरुकुल पौन्धा के Facebook पेज पर भी आप देख सकते हैं।

गुरूकुल पौन्धा देहरादून का १८ वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

(१ से ३ जून २०१८ तक के सम्पूर्ण कार्यक्रम का विवरण)

❑ प्रस्तुतकर्ता- श्री मनमोहन आर्य.....✍

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा–देहरादून आर्ष शिक्षा पद्धति पर संचालित देश और आर्यसमाज का महत्वपूर्ण गुरुकुल है। इस गुरुकुल की स्थापना १८ वर्ष पूर्व जून, २००० में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की थी। इस गुरुकुल का आचार्य २२ वर्ष के एक युवक श्री धनंजय आर्य जी को बनाया गया था जो गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के स्नातक थे। आज भी आचार्य धनंजय ही इस गुरुकुल के आचार्य व प्राचार्य हैं। आरम्भ में गुरुकुल में चार ब्रह्मचारी थे और आज लगभग ११० ब्रह्मचारी हैं। अनेक ब्रह्मचारी स्नातक बनकर गुरुकुल से जा चुके हैं जिनमें से अनेक प्रवक्ता, सरकारी अधिकारी व सेवक या फिर आर्य समाजों में पुरोहित का कार्य कर रहे हैं। गुरुकुल उत्तरोत्तर प्रगति पर है। एक झोपड़ी से आरम्भ किये गुरुकुल में इस समय भव्य भवन, छात्रावास, यज्ञशाला, सभागार, ब्रह्मचारियों के अध्ययन के कक्ष, कुछ ऋषि भक्तों लघु कुटीरें हैं। गुरुकुल की अपनी एक गोशाला भी हैं जहां अच्छी नस्ल की गायें हैं। जल, विद्युत, मोबाइल, इंटरनैट आदि सभी प्रकार की सुविधायें भी गुरुकुल परिसर क्षेत्र में उपलब्ध हैं। आज गुरुकुल तक पहुंचने के लिए अच्छी सड़क भी उपलब्ध है। अपने वाहन से सुगमता से गुरुकुल पहुंचा जा सकता है। इस वर्ष इस गुरुकुल के ८ ब्रह्मचारी स्नातक बने हैं। कुछ ब्रह्मचारी शोध उपाधि प्राप्त कर चुके हैं और कुछ शोध कार्य में संलग्न हैं। यह गुरुकुल ऊंचे ऊंचे वृक्षों से आच्छादित वन के बीच में स्थित है। एक ओर एक सूखी नदी भी है जो वर्षा ऋतु में जल से भर कर बहती है। गुरुकुल का वार्षिकोत्सव प्रत्येक वर्ष जून के प्रथम रविवार व उससे पूर्व के दो दिन मिलाकर तीन दिन तक मनाया जाता है। आर्यजगत के चोटी के विद्वान, भजनोपदेशक और पुस्तक विक्रेता, राजनेता, सेवानिवृत अधिकारी एवं बड़ी संख्या में ऋषि भक्त यहां आते हैं।

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा–देहरादून का १८वां वार्षिकोत्सव इस वर्ष दिनांक १ से ३ जून, २०१८ तक सोल्लास आयोजित किया गया। इससे पूर्व गुरुकुल में २६ से ३१ मई, २०१८ तक 'सत्यार्थप्रकाश स्वाध्याय शिविर' आर्य विद्वान डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई के सान्निध्य में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर में सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास पर ऋषि के विचारों को पढ़कर उससे जुड़े विषयों का उल्लेख कर डा. सोमदेव शास्त्री जी ने शिविरार्थियों को ग्यारहवां समुल्लास हृदयंगम कराया। १ जून को प्रातः योग साधना व प्रशिक्षण के अभ्यास के बाद प्रातःकाल ८.०० बजे से ऋग्वेद पारायण यज्ञ डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई के ब्रह्मत्व में तीनों दिन हुआ। यज्ञ में वेद मंत्रोच्चार वा वेद–पाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने किया। उत्सव के तीनों दिन प्रातः व अपरान्ह यज्ञ होता रहा और उसके बाद आर्य भजनोपदेशकों के भजन, व्याख्यान होते रहे। अनेक सम्मेलन भी इस अवसर पर सम्पन्न हुए जिनका उल्लेख हम अपने इस लेख में आगे करेंगे। उत्सव में भाग लेने के लिए देश के अनेक भागों से सहस्रों की संख्या में ऋषि भक्त स्त्री–पुरुष अपने परिवारों सहित पधारे। सबने यहां तीन दिनों तक एक साथ मिलकर निवास करने के साथ सत्संग का लाभ लिया और परस्पर मिलकर भोजन आदि ग्रहण किया। उत्सव शान्तिपूर्वक सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। अनेक पुस्तक विक्रेता, यज्ञ सामग्री एवं औषधि आदि पदार्थों के विक्रेता भी अपनी अपनी वस्तुओं की बिक्री आदि करते रहे। सारा वातावरण आर्यों के बृहद सत्संग, सम्मेलन वा मेले के रूप में दिखाई देता था। हमें इस उत्सव में अनेक ऐसे लोग मिले जिन्हें हम फोन, इमेल, आर्य पत्र–पत्रिकाओं व फेसबुक आदि के माध्यम से जानते थे। एक दूसरे से मिलने व संक्षिप्त वार्तालाप का अवसर भी इस अवसर पर हम सभी को प्राप्त हुआ। लोगों ने नये मित्र बनाये और

तीन दिन तक आध्यात्मिक उन्नति व ज्ञान प्राप्ति कर उत्सव की समाप्ति पर अपने अपने निवासों को लौट गये। हमने आर्यसमाज व सभाओं के अनेक उत्सव देंखे हैं। गुरुकुल के उत्सव की बात ही निराली है। यहां हर कार्य व्यवस्थित एवं समयबद्ध रूप से सम्पादित किया जाता है। आर्यजगत के उच्च कोटि के विद्वान व भजनोपदेशक यहां सहर्ष स्वयमेव पधारते हैं। गुरुकुल का वातावरण भी शहरी व नगरीय न होकर वनों के बीच स्थित है जहां शुद्ध वायु बहती है और चारों ओर का दृश्य मन को आकर्षित व शान्ति पहुंचाने वाला है।

प्रथम दिवस प्रातः यज्ञ में अनेक दम्पती यजमान बने। यज्ञ मुख्य यज्ञशाला सहित अन्य तीन बृहद यज्ञ–कुण्डों में भी किया गया। मुख्य यजमान गुरुकुल के लिए भूमि दान देने वाले स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के पौत्र व पौत्रवधु थे। यज्ञ के मध्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी का यज्ञ के महत्व पर प्रभावशाली व सारगर्भित प्रवचन हुआ। हमने स्वामी जी का उद्बोधन नोट किया जिसे हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी का सम्बोधन -स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि अग्निहोत्र–यज्ञ वायु, जल, अन्न व ओषधियों आदि को शुद्ध करता है। उन्होने कहा कि १ तोला देशी गाय के शुद्ध घृत से आहुति देने से बहुत बड़ी मात्रा में वायु शुद्ध व गुणकारी होती है। स्वामी जी ने इतिहास में वर्णित राजा अश्वपति का उल्लेख किया और बताया कि उनके राज्य में एक भी नागरिक ऐसा नहीं था जो बिना यज्ञ किये भोजन करता हो। स्वामी जी ने श्रद्धालु यजमानों व श्रोताओं को कहा कि आप लोगों ने यज्ञ करके स्वयं और दूसरों में सुख बांटा है। उन्होंने कहा कि जहां तक इस यज्ञ के सम्पर्क में आयी वायु जायेगी वहां वहां सुख का विस्तार होगा। स्वामी जी ने प्रकृति में घट रहे नियम का उल्लेख कर कहा कि जो मनुष्य दूसरों को सुख बांटता है उसे भी ईश्वर की व्यवस्था से सुख मिलता है। उन्होंने कहा कि जो हम बोते हैं वही हमें मिलता है। आम का पेड़े लगायें तो उसमें आम ही लगेंगे। स्वामी जी ने कहा कि अग्निहोत्र यज्ञ सबको सुख देने वाला व दुःखों का नाश करने वाला है। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने कहा कि हमें श्वांस की हर क्षण आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यदि हमें ३ मिनट तक सांस न मिले तो हमारा जीवन समाप्त हो जाता है। यज्ञ के इस महत्व के कारण हम सबको अपने अपने घरों पर प्रतिदिन अग्निहोत्र हवन करना है। पति व पत्नी दोनों को मिल कर अग्निहोत्र यज्ञ में आहुति देनी चाहिये। माता–पिता को चाहिये कि वह यज्ञ का समय निर्धारित करते समय इस बात का ध्यान रखें कि उनके बच्चे स्कूल जाने से पहले अग्निहोत्र में आहुतियां डाल कर स्कूलों को जायें। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने सबको अग्निहोत्र यज्ञ करने की प्रेरणा की। उन्होंने कहा कि हवन वा यज्ञ करके हम पुण्य नहीं करते अपितु पापों से बचते हैं। उन्होंने बताया कि मनुष्य शरीर से जो दूषित सांस बाहर आता है उससे वायु में प्रदुषण होने से उस मनुष्य को उस मात्रा में पाप होता है। इसी प्रकार वस्त्र धोने से पानी गन्दा होता है। भोजन आदि पकाने से भी वायु प्रदुषण होता है। हमारे मल–मूत्र से भी वायु प्रदुषण होता है जिससे अन्य प्राणियों को भी रोग होते हैं। मनुष्य के अपने ऐसे अनेक कार्य होते हैं जिससे पर्यावरण व समाज को हानि होती है। इनसे सबसे उसे पाप लगता है। इसका समाधान करने के लिए ही यज्ञ किया जाता है जिससे हम अनजाने में हुए पापों के फलों से मुक्त हो सकें। स्वामी जी ने कहा कि हमारा शरीर भौतिक वस्तु है। इसका कल्याण अग्निहोत्र यज्ञ करके ही होगा। वेदों के विद्वान स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि मनुष्य का अन्तःकरण भी सन्ध्या, स्वाध्याय व यज्ञ करने से शुद्ध होता है। स्वामी जी ने लोगों को यह भी बताया कि स्त्रियां जब यज्ञ में बैठे तो वह अपने सिर को ढका करें। पुरुष भी अपने शिर की रक्षा के निमित्त उसे ढक सकते हैं। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने कहा कि ईश्वर हमारा सबसे बड़ा हितैषी है। वह सदा सदा का हमारा साथी है। परमात्मा पूर्ण है और ज्ञानस्वरूप एवं आनन्दस्वरूप है। उसे हमारी किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। हम जो सन्ध्या, स्वाध्याय व यज्ञ आदि करते हैं उससे हमें ही लाभ होता है व हमारा कल्याण होता है। अतः सबको सबके उपकारक यज्ञ कर्म को प्रतिदिन नियमपूर्वक अवश्य करना चाहिये। यह कहकर स्वामी जी

ने अपने वक्तव्य को विराम दिया। ओ३म् शम्। यज्ञ के ब्रह्मा डा. सोमदेव शास्त्री जी ने भी यज्ञ विषयक अनेक महत्वपूर्ण टिप्पणियां की और नियत मंत्रपाठ होने पर यज्ञ का समापन कराया।

यज्ञ की समाप्ति पर ध्वजारोहण हुआ। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं अन्य अनेक आर्य विद्वानों की उपस्थिति में ओ३म् ध्वज फहराया। ध्वजारोहण के साथ राष्ट्रीय प्रार्थना 'आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्' मन्त्र का गान एवं ध्वज गीत हुआ जिसे आर्य भजनोपदेशक पं. सत्यपाल सरल जी ने गाकर प्रस्तुत किया।

उत्सव के प्रथम दिन पूर्वान्ह के सत्र को 'सद्धर्म सम्मेलन' का नाम दिया गया जिसका संचालन गुरुकुल के पूर्व ब्रह्मचारी डा. अजीत आर्य ने किया। सम्मेलन आरम्भ होने से पूर्व शास्त्रीय गायक पं. कल्याणदेव वेदि, श्री नरेशदत्त आर्य जी एवं गुरुकुल के पूर्व स्नातक डा. सौरभ आर्य के भजन हुए। पं. कल्याणदेव वेदि जी ने दो भजन प्रस्तुत किये प्रथम भजन के बोल थे 'हम भूले हैं न भूलेंगे वो शिवरात्रि की रात, मूल शंकर के मचलते जजबात की रात। अज्ञान अंधेरे को मिटाया जिसने, चीर कर रात का सूर्य उगाया जिसने। ये अंधेरे से उजाले की मुलाकात की रात। हम न भूलेंगे वो शिवरात्रि की रात।' उनका गाया गया दूसरा भजन था 'धर्म के नाम पर इंसान कितना पाप करता है। कहीं सरे आम और कहीं चुपचाप करता है।' श्री नरेश दत्त आर्य ने तीन भजन प्रस्तुत किये। उनके द्वारा प्रस्तुत प्रथम भजन था 'धर्म की महिमा अपार, धर्म पर ठहरा संसार, धर्म की रक्षा करो, धर्म है सबका आधार।' पं. नरेश दत्त जी द्वारा प्रस्तुत दूसरा भजन था 'प्रभु की वाणी है वेद माता, इसी पे अपना यकीन रखना। उपदेश करता है वो विधाता, इसी पे अपना यकीन रखना।' पं. नरेश दत्त जी द्वारा प्रस्तुत तीसरा भजन था 'अपने बुढ़ापे का छूटा सहारा जमीं पर ये लेटा है बेटा तुम्हारा। गया था फूल लेने डसा नाग ने इसे, घोर अन्याय किया है अपने भाग्य ने।' यह तीसरा भजन राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र के जीवन की घटनाओं पर आधारित था। डा. सौरभ आर्य, दिल्ली द्वारा प्रस्तुत भजन के शब्द थे 'ओंकार प्रभु नाम जपो ओंकार प्रभु नाम जपो, मन में ध्यान लगाकर सुबह और शाम जपो।। ओंकार प्रभु नाम जपो।।'

सद्धर्म सम्मेलन में दो आर्य विद्वानों पं. धर्मपाल शास्त्री एवं पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी के सारगर्भित एवं विद्वतापूर्ण उपदेश हुए। सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की। तीनों विद्वानों के प्रवचन में कही गयी कुछ प्रमुख बातें प्रस्तुत हैं:-

सद्धर्म सम्मेलन में आर्य विद्वान पं. धर्मपाल शास्त्री का सम्बोधन -पं. धर्मपालशास्त्री ने अपना व्याख्यान आरम्भ करते हुए कहा कि धर्म के गूढ़ तत्व व इसके दार्शनिक पहलू पर वह सामान्य चर्चा आरम्भ करते हैं। सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक किसी मत व सम्प्रदाय का कोई इतिहास व उल्लेख कहीं नहीं मिलता। सभी मत व सम्प्रदाय महाभारत युद्ध के बाद प्रवर्तित व प्रचलित हुए। वैदिक धर्म के साथ सत्य सनातन विशेषण इसी लिए लगता है कि यह सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के लगभग १.९६ करोड़ वर्षों से अधिक समय तक सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित रहा। सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों पर आधारित संसार में केवल वैदिक धर्म ही है, अन्य कोई मत व सम्प्रदाय नहीं है। सत्य पर आधारित होने के कारण प्रलय तक यही धर्म संसार में विद्यमान रहेगा तथा विवेकशील मनुष्य इसी धर्म का पालन करेंगे। विद्वान आचार्य धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि धर्म शब्द का किसी भाषा में कोई पर्यायवाची शब्द नहीं है। धर्म शाश्वत है। धर्म सद् आचरणों की आचार संहिता वेद की शिक्षाओं के पालन व उनके सर्वत्र प्रचार प्रसार का नाम है। वेद और सदाचार को अपनाकर ही मनुष्य जीवन का कल्याण होता है। धर्म के गुणों को जो मनुष्य धारण करता है उसका इस जीवन में कल्याण होता है और परजन्म में भी। धर्म व उसके गुणों को धारण करने से ही मनुष्य धार्मिक कहलाता है। जो लोग वेद के सत्य, परोपकार एवं सेवा आदि गुणों को धारण नहीं करते वह धार्मिक नहीं है। हिंसा की प्रवृत्ति रखने वाले मनुष्य जो अकारण दूसरे सज्जन मनुष्यों व पशु आदि की हत्या कर उनका मांस आदि भक्षण करते हैं, उनमें से कोई भी मनुष्य धार्मिक मनुष्य नहीं कहला सकता।

आचार्य धर्मपाल शास्त्री जी ने प्रश्न किया कि धर्म किसे कहते है? उन्होंने इसका उत्तर देते हुए कहा कि धर्म वेद निर्दिष्ट उन सत्य आचरणों एवं व्यवहार का नाम है जिन्हें करके मनुष्य का यह जन्म व परलोक सुधरता है वा उन्नति को प्राप्त होता है। आचार्य जी ने मनु द्वारा कहे गये धर्म के दस लक्षण धैर्य, क्षमा, बुरी इच्छाओं का दमन, कोई कार्य छिप कर न करना अर्थात् चोरी न करना, स्वच्छता, इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण, विवेकपूर्ण बुद्धि, विद्या, सत्य का त्याग न करना व मन को क्रोधरहित रखने का उल्लेख किया और कहा कि इन धर्म के लक्षणों में जीवन की उन्नति की सभी बातें सम्मिलित हैं। शास्त्री जी ने कहा कि धर्म का प्रथम लक्षण धैर्य है। जो विपरीत परिस्थियों में धैर्य गुण को धारण करता है, उससे विचलित नहीं होता है, वह धार्मिक कहलाता है। सज्जन लोगों से गलती हो जाने पर उन्हें क्षमा प्रदान करना भी धर्म है। दुष्टों को यदि क्षमा करेंगे तो वह हमारे व समाज के लिए हानिकारक होंगे। मन का संयम व उसका नियंत्रण भी धर्म है। आचार्य जी ने धर्म के अन्य लक्षणों की भी संक्षिप्त व्याख्या की। सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार व यथायोग्य व्यवहार करना ही धर्म है। यदि हम यथायोग्य व्यवहार नहीं करेंगे तो इससे हम अपनी ही हानि कर दुःखी हो सकते हैं।

आचार्य धर्मपाल शास्त्री जी ने कहा कि दुर्भाग्य है कि हम अविद्या व अज्ञान से युक्त मत व सम्प्रदायों को धर्म कहकर सम्बोधित करते हैं। उन्होंने कहा कि हिन्दू, ईसाई, इस्लाम आदि धर्म नहीं अपितु मत व सम्प्रदाय हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जिसे कोई मनुष्य आरम्भ करता व चलाता है वह मत होता है। धर्म तो केवल ईश्वर द्वारा ही प्रवर्तित किया जाता है और वह सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर प्रदत्त वेद से आरम्भ हुआ वैदिक धर्म ही है। आचार्य जी ने कहा जिसे हिन्दू धर्म कहा जाता है वह सत्य सनातन वैदिक धर्म का विकृत रूप है जिसमें महाभारत काल के बाद अनेक अन्धविश्वास, अज्ञानता, अविद्यायुक्त मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, सामाजिक असमानता व जन्मना जातिवाद आदि प्रचलित हो गये। इन अन्धविश्वासों आदि से मुक्त ऋषि दयानन्द द्वारा वेद व ऋषियों के ग्रन्थों पर आधारित वैदिक धर्म ही सच्चा धर्म है। आचार्य जी ने धर्म निरपेक्ष शब्द को भी अनुचित बताया और कहा कि धर्म सत्य गुणों को धारण करने का नाम है उससे निरपेक्ष का अर्थ सत्य का त्याग करना होगा। पं. धर्मपाल शास्त्री जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि के समय में धर्म केवल चूल्हे व चौके की शुद्धता तक ही सीमित हो गया था। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मा कथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' से इसका एक उदाहरण भी प्रस्तुत किया। धर्म मनुष्यों को सत्य व निर्भ्रान्त सिद्धान्तों के आधार पर आपस में जोड़ता है जबकि मत, मजहब व सम्प्रदाय समाज को तोड़ते हैं। शास्त्री जी ने अपने वक्तव्य को विराम देते हुए कहा कि हमें धर्म के सत्य स्वरुप को समझना होगा। उन्होंने कहा कि धर्म के विरुद्ध जो भ्रान्तियां फैली हुई हैं उन्हें जानकर उनमें लिप्त नहीं होना है। दूसरों को भी धर्म का सत्य स्वरुप समझाकर हमें सत्य धर्म का प्रचार करना चाहिये।

वैदिक विद्वान पं. वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी का व्याख्यान- ऋषिभक्त विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि यदि संसार के सभी लोग कोशिश करें कि वह सब मिलकर विश्व में धर्म का प्रवर्तन करा दें तो उनके द्वारा ऐसा करना सम्भव नहीं है। उन्होंने कहा कि धर्म वह है जो सबके भीतर अन्तर्यामीस्वरुप से विद्यमान है तथा जो सबकी आत्माओं को सत्य का आचरण करने की प्रेरणा करता है। धर्म वह है जो एक परमात्मा से ही चलता है। मनुष्य तो उसे जानकर उसका प्रचार व प्रसार ही कर सकता है, उससे भिन्न अन्य किसी धर्म का प्रचलन व प्रवर्तन नहीं कर सकता। विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि संसार में ईश्वर एक है और उसके द्वारा सभी मनुष्यों के लिए चलाया गया धर्म भी एक ही है। धर्म वह है जो एक ईश्वर से ही चलता है। ईश्वर नित्य है तो उसका चलाया गया धर्म भी नित्य ही है। आचार्य वेदप्रकाश जी ने श्रोताओं को सत्य के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि नित्य का व्यवहार करने के लिए सत्य शब्द का प्रयोग होता है। सत्य सदा वर्तमान रहता है। उन्होंने कहा कि ईश्वर है, यह विचार, भावना व कथन सत्य है। ईश्वर के न होने को कोई भी विवेकशील व्यक्ति स्वीकार नहीं

कर सकता। आचार्य जी ने कहा कि कुम्हार के बिना घड़ा व मिट्टी की अन्य वस्तुयें बन नहीं सकती। उन्होंने कहा कि कुम्हार से पृथक सत्ता मिट्टी को मानते हैं। इसी प्रकार से ईश्वर से भिन्न जड़ प्रकृति की सत्ता को भी मानना पड़ेगा। ईश्वर न होता तो संसार को कौन बनाता? किसी भी वस्तु के निर्माण के लिए एक चेतन निमित्त कारण की आवश्यकता अवश्यम्भावी है। आचार्य जी ने कहा कि संसार बनाने के लिए ईश्वर सहित प्रकृति व जीव की सत्ता का होना भी आवश्यक है।

विद्वान आचार्य श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने कहा कि जिस रचना का कोई उद्देश्य व कारण हो और जिसकी सत्ता व विद्यमानता सिद्ध हो, उसे सत्य कहते हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य में ताकत नहीं कि वह ईश्वर द्वारा प्रवर्तित धर्म को बदल दे। आचार्य जी ने कहा कि ईश्वर के सृष्टि रचना, संसार के पालन व कर्म–फल विधान को कोई मनुष्य बदल नहीं सकता। मनुष्य तो केवल वेद या विवेक से उन्हें जानकर अपने जीवन को उन्नत कर सकता है। आचार्य जी ने कहा कि भिन्न भिन्न अवयवों से बनी वस्तु को अवयवी कहते हैं। भिन्न भिन्न अवयवों से बना हुआ हमारा शरीर व अन्य प्राणियों के देह हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर ने जिस प्रयोजन से जो पदार्थ व शरीरादि बनायें हैं, उनसे वही उपयोग लिया जाना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि कान सुनने के लिए बनाये गये हैं। इन कानों से केवल सुनने का काम ही लिया जा सकता है। जीव ईश्वर के बनाये शरीर के अवयवों से ही व्यवहार कर पायेगा। उन्होंने पूछा कि संसार में क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो ईश्वर की व्यवस्था और उसके द्वारा बनाये पदार्थों के प्रयोजन, उपयोग व उन पदार्थों के गुण, कर्म व स्वभाव अर्थात् उनके धर्म को बदल दे? विद्वान आचार्य श्रोत्रिय जी ने कहा कि हम ईश्वर के बनाये पदार्थों से वही काम ले सकते हैं जिसके लिए उन्हें बनाया गया है। ईश्वर सत्य और असत्य को जानता है। ईश्वर ही धर्म और अधर्म, पाप और पुण्य, विधि–अविधि आदि को भी जानता है। परमात्मा ने सत्य और असत्य को अलग अलग किया है। सत्य और असत्य एक नहीं है। दोनों अलग अलग हैं। उन्होंने श्रोताओं से सत्य में श्रद्धा रखने और असत्य में अश्रद्धा रखने को कहा। आचार्य जी ने उदाहरण देते हुए कहा कि मैंने सोना देखा, विचार आया कि इसे उठा लूं। मन ने कहा कि यह सोना तेरा नहीं है। उन्होंने कहा कि कई बार हम अपनी आत्मा की आवाज को दबा लेते हैं। श्रोत्रिय जी ने एक अन्य उदाहरण देते हुए कहा कि कहीं एकान्त में बढ़िया सा मोबाइल पड़ा है। व्यक्ति उसके पास जाता है। विचार करता है कि इसे ले लूं। ऐसा विचार कर उसके हृदय की घड़कन बढ़ती है। इससे व्यक्ति का रक्त संचार बढ़ता है तथा भाव–भंगिमायें बदलती हैं। शंका पैदा हो रही है, लज्जा हो रही है। आचार्य जी ने इससे संबंधित ऋषि दयानन्द के शब्दों को उद्धृत किया। उन्होंने कहा कि जिस काम को करने में भय, शंका व लज्जा उत्पन्न हो वह काम करना अधर्म है। जिस काम को करने में हर्ष व उत्साह पैदा हो उसे करना धर्म होता है। अच्छा काम करने में जो हर्ष पैदा होता है वह ईश्वर की ओर से होता है। इसलिए इसे धर्म कहते हैं।

आचार्य श्रोत्रिय जी ने कहा कि धर्म वह है जो ईश्वर की आज्ञा के अनुकूल हो। आचार्य जी ने ऋषि दयानन्द जी के गुणों की प्रशंसा की। आचार्य जी ने कहा कि जो पीसे हुए को पीसता है वह ऋषि नहीं कहाता। आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने ऋषि दयानन्द जी के वेदभाष्य की चर्चा की। उन्होंने बताया कि ऋषि दयानन्द जी का वेद भाष्य उनसे पूर्व किये गये वेदभाष्यों से उत्तम व विशेष है। आचार्य जी ने कहा कि धर्म ईश्वर की आज्ञा के पालन करने को कहते हैं। उन्होंने कहा कि अन्तर्यामी परमात्मा जीव के भीतर बाहर विद्यमान है। वह जीवों को असत्य को छुड़ाने और सत्य को ग्रहण करने की प्रेरणा करता है। इस कारण कोई मनुष्य वा उसकी आत्मा ईर्ष्या व द्वेष आदि को पसन्द नहीं करते। ईश्वर आत्मा में विद्या का प्रकाश करता है। आचार्य जी ने कहा कि जहां अविद्या होती है वहां राग, द्वेष, काम व क्रोध आदि होता है। जहां विद्या होती है वहां यह दोष नहीं होते। आचार्य जी ने कहा कि विद्या से ही अहिंसा का वास्वविक स्वरुप प्रकट होता है। उन्होंने कहा कि वैर त्याग का नाम अहिंसा है। अविद्रोह अहिंसा है। उनके अनुसार यदि धर्म के लक्षणों में अहिंसा को सम्मिलित किया जाये तो धर्म के ग्यारह लक्षण

होते हैं। धर्म पर चलने से हमें कष्ट होता है। आचार्य जी ने ऋषि का उल्लेख कर उनके विचारों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि अन्याय व अधर्म से यदि चक्रवर्ती राज्य भी मिलता है तो ग्रहण न करें। उन्होंने कहा कि प्राण भले ही चले जायें वा जा रहे हों, उस अवस्था के आने पर भी अधर्म का सहारा न लेकर धर्म का ही पालन करें। आचार्य जी ने मृत्यु के डर की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि मरना तो सबको है। यदि अधर्म करोगे तो पाप का बोझ साथ लग जायेगा। उन्होंने कहा कि मृत्यु भी आ जाये तब भी उससे बचने के लिए अधर्म न करें। मनुष्य धन कमाते हुए यह नहीं सोचता कि एक दिन मरना भी है। आचार्य जी ने कहा कि माना कि धर्म का पालन करने में कष्ट होता है परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि सुख व दुःख दोनों अनित्य हैं, सदा नहीं रहेंगे। यह तो आते जाते रहते हैं। धन व शक्ति से सभी दुःखों की निवृत्ति व सभी सुखों की प्राप्ति नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि माना कि अधर्म करने से सुख मिलता है परन्तु अधर्म करने से भविष्य में उसका फल दुःख तो भोगना ही होगा। अधर्म करने से मनुष्य की सबसे बड़ी हानि यह होती है कि इससे सुख का मूल हमेशा के लिए कट जाता है।

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि ईश्वर व धर्म नित्य हैं इसलिये नित्य का संबंध करो। धर्मात्मा सच्चे व झूठे होते हैं। सभी धर्मात्मा सच्चे नहीं होते। कुछ दीखते सच्चे हैं पर होते नहीं। सूर्य अपने प्रकाश से सर्वत्र भौतिक पदार्थों को प्रकाशित करता है। जो कर्म देखने में धर्म जैसे लगते हैं पर होते नहीं हैं, वह मिथ्याचार है या धर्माभास है। उनका फल अधर्म व पाप कर्मों के अनुसार होता है। आचार्य जी ने कहा कि पाप व पुण्य कर्म आपस में जुड़ते व घटते नहीं हैं। उन्होंने गधे और घोड़े का उदाहरण देकर कहा कि १०० गधे और ५० घोड़े को आपस में जोड़ा व घटाया नहीं जा सकता। आचार्य जी ने कहा कि छल व कपट का व्यवहार अनुचित है। कोई दीवार तोड़कर किसी के घर में घुस जाये उसे चोर कहते हैं। कोई किसी की चीज उठा ले वह भी चोर कहलाता है। यदि कोई मनुष्य किसी दूसरे व्यक्ति की वस्तु को लेने की इच्छा कर लेता है तो वह भी चोर होता है। ब्रह्म के स्थान पर जो अपनी पूजा कराता है वह भी चोर होता है। कोई मनुष्य अपनी इच्छा से वेद व ईश्वराज्ञा से विरुद्ध कल्पना करके जो बातें प्रचलित करता है वह मत होता है धर्म नहीं। मनुष्यों को मत का नहीं धर्म का पालन करना चाहिये। विचार बहुत हैं इसलिये धर्म भी बहुत हैं।

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने कहा कि यदि मत में से मत प्रवर्त्तक को निकाल दें तो कुछ बचता नहीं है। उन्होंने कहा कि धर्म में से राम, कृष्ण और दयानन्द आदि को निकाल दें तो धर्म की कुछ हानि नहीं होती है। धर्म इन महापुरुषों से नहीं चला अपितु यह लोग धर्म पर चले थे। श्रोत्रिय जी ने कहा कि जो मनुष्य धर्म पर चलता है उसे धर्मात्मा कहा जाता है। आचार्य जी ने वर्षों पुराने एक ऊंचे वृक्ष और एक बरसात में उत्पन्न बेल की चर्चा की जो कुछ ही समय में वृक्ष के शिखर तक पहुंच जाती हैं और कुछ दिनों बाद ही सूख भी जाती है। उन्होंने कहा कि सभी मत व सम्प्रदाय बेल के समान हैं। धर्म सदा शाश्वत व अमर रहता है। आचार्य जी ने कहा कि ईश्वर एक है इसलिये धर्म भी एक ही है। ईश्वर नित्य है अतः उसका धर्म भी नित्य है। ईश्वर प्रदत्त भाषा, धर्म व संस्कृति एक है। सारी मनुष्य जाति भी एक है। समस्त मनुष्य जाति का एक ही धर्म है। जब तक एक धर्म का पालन नहीं होगा तब तक विखराव बना रहेगा। आचार्य जी ने खरबूजे और सन्तरे का उदाहरण दिया। खरबूजा बाहर से अनेक भागों वाला दीखता है लेकिन भीतर से वह एक होता है। सन्तरा बाहर से एक परन्तु भीतर से अनेक है। सन्तरें में भीतर पृथकता व अनेकता होने पर भी उन सबमें रस, स्वाद व गुण पूर्णतः एक समान होते हैं। यही वस्तुतः अनेकता में एकता है। सन्तरे की अलग अलग फांको के गुण व धर्म पृथक नहीं अपितु एक समान होते हैं। हम भी रूप, आकृति व रंग से भले ही भिन्न भिन्न हों परन्तु हमारे गुण, कर्म व स्वभाव सभी के एक समान होने चाहियें। आचार्य जी ने कहा कि समझौतावादी नीति से धर्म कभी आगे नहीं बढ़ेगा। स्वामी दयानन्द भी बिना समझौतावादी बने अकेला खड़ा रहा। उन्होंने सत्य को पकड़े रखा परन्तु मत–मतान्तरों से भयभीत नहीं हुआ और न उसने किसी से समझौता किया। इसके साथ ही आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने

अपने व्याख्यान को विराम दिया।

गुरुकुल के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती का सम्बोधन- स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने धर्म विषयक प्रायः सभी बातें कह दी हैं। परमात्मा ने हमें मुख दिया है इसलिये हमें कुछ कहना चाहिये। उन्होंने कहा कि गुरुकुल पौन्धा के ब्रह्मचारी ऐसे हैं कि मुझे यहां कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस कारण मैं मंच पर उपस्थित रहता हूं। स्वामी जी ने कहा कि स्वाभाविकता धर्म है और अस्वाभिवकता अधर्म है। एक परिवार का उदाहरण देते हुए स्वामी जी ने कहा कि आर्यसमाज का एक विद्वान संन्यासी एक व्यक्ति के घर पर गया। उस भवन स्वामी के छोटी आयु के पुत्र ने दरवाजा खोला। उस विद्वान ने कहा कि आपके पिताजी से मिलना है। बालक ने अपने पिता को उस विद्वान के आने की सूचना दी। पिता ने उससे कहा कि उन्हें कह दो कि मैं घर नहीं हूं। बच्चा आता है और विद्वान को कहता है कि पिता जी कह रहे हैं कि वह घर पर नहीं हैं। स्वामी जी ने पूछा कि पिता धर्मात्मा है या बच्चा? उन्होंने स्वयं उत्तर दिया कि बच्चा स्वभाविक है इसलिये वही धर्मात्मा है। सृष्टि में अग्नि तत्व गर्मी व प्रकाश देता है। यह अग्नि का धर्म है। जल का धर्म शीतलता प्रदान करना है। जल अग्नि को बुझाता है। जल का धर्म अग्नि को बुझाना है जिसका वह हमेशा पालन करता है। सूर्य का धर्म संसार को प्रकाश व गर्मी देना है। सूर्य यह काम भली–भांति कर रहा है। उन्होंने कहा कि यदि स्वामी दयानन्द जी जैसे विद्वान हों तो उनकी उपस्थिति में अज्ञानी, अल्पज्ञानी व अधर्म करने वाले भाग जाते हैं। वह उनसे अविद्यामूलक अपनी बातें स्वीकार नहीं करा सकते। सत्य को जानना व उसका पालन करना ही धर्म है। स्वामी जी ने कहा कि मूर्तिपूजा अधर्म है। सन्ध्या करना धर्म है। इसी के साथ सद्धर्म सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

वेद-वेदांग सम्मेलन

प्रथम दिन अपरान्ह के सत्र में पहले ऋग्वेद पारायण यज्ञ किया गया। यज्ञ के बाद वेद–वेदांग सम्मेलन हुआ। इसके संयोजक थे डा. अजीत आर्य। सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य डा. यज्ञवीर जी ने की और सम्मेलन की भूमिका गुरुकुल आचार्य डा. धनंजय आर्य जी ने प्रस्तुत की। सम्मेलन के आरम्भ में विख्यात भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक जी ने दो भजन प्रस्तुत किये जिसके बाद डा. रघुवीर वेदालंकार और पं. वेद प्रकाश श्रोत्रिय के व्याख्यान हुए। पथिक जी द्वारा प्रस्तुत पहला भजन था 'ज्ञान का सागर चार वेद ये वाणी है भगवान की, इसी से मिलती सब सामग्री जीवन के कल्याण की।' उनके द्वारा प्रस्तुत दूसरा भजन था 'हमारे देश में भगवन भले इंसान पैदा कर, सकल सुख सम्पदा वाली सुखी सन्तान पैदा कर।' सम्मेलन का प्रथम सम्बोधन डा. रघुवीर वेदालंकार जी का हुआ। यह सम्बोधन प्रस्तुत है।

वैदिक विद्वान डा. रघुवीर वेदालंकार जी का व्याख्यान- आचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि मैं वेदांग पढ़ाता हूं। वेद पढ़ता हूं परन्तु वेद पढ़ाता नहीं। इस लिए वेद नहीं पढ़ाता क्योंकि वेद पढ़ने वाले नहीं है। आप सुनने वाले हैं। आप वेद पढ़ने वाले बनें।

आचार्य जी ने प्रश्न किया कि वेद हमें क्यों पढ़ने चाहियें? आचार्य जी ने कहा कि आज देश और समाज में जितनी भी खराबी हुई है वह ईश्वर व धर्म ने कर रखी है। सभी सामाजिक व धार्मिक बुराईयां ईश्वर व धर्म के नाम पर हो रही हैं। आजकल धर्म शब्द का प्रयोग मत–मतान्तरों के लोक में प्रचलित व्यवहारों के लिए हो रहा है। विद्वान आचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि ईश्वर व धर्म मुख्य हैं। इसे जानकर संसार शान्ति से रहेगा। आचार्य जी ने कहा कि आज का मनुष्य अविवेकशील है। ऐसे अविवेकी मनुष्य अपने अपने मत को मानते हैं। ऋषि दयानन्द की तरह सच्चे मत व धर्म की खोज करने वाला कोई नहीं है। उन्होंने कहा कि आतंकी भी अपने आपको धार्मिक मानते हैं। यह आतंकी अपने मत की विचारधारा को बढ़ा रहे हैं। झगड़ा ईश्वर व धर्म के नाम पर ही है। सबकी अपनी अपनी धर्म पुस्तकें हैं। अपने अपने ईश्वर व मत–प्रवर्तक आदि भी हैं। आचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि जो वेदवेत्ता नहीं है वह उस महान ईश्वर को नहीं जान सकता। आचार्य जी ने वेदमंत्र 'वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्' का उच्चारण किया। उन्होंने कहा कि वेद घोषणा कर रहा है कि मैं वेद पढ़ने वाला

ईश्वर को जानता हूं। इसके बाद आचार्य जी ने वेदमंत्र 'स्तुता मया वरदा वेदमाता' मन्त्र का उच्चारण किया। आचार्य जी ने कहा कि मन्त्र में वेद पद स्त्रीलिंग में है। उन्होंने कहा कि बच्चे को उसकी माता ही बता सकती है कि उसका पिता कौन है। इसी प्रकार वेद माता हम मनुष्यों को ईश्वर के बारे में बताती है। बिना वेद माता के बताये व जाने मनुष्य को ईश्वर के सच्चे स्वरुप का ज्ञान नहीं होता। आचार्य जी ने आगे कहा कि मनु महाराज ने कहा है कि जो धर्म को जानना चाहें, उनके लिए परम प्रमाण वेद हैं। डा. रघुवीर वेदालंकार जी ने कहा कि वेद की शरण न लेकर अन्यत्र जायेंगे तो वहां ईश्वर का असत्य स्वरुप बताया जायेगा। उन्होंने कहा कि यदि हम ईश्वर व धर्म के सत्य स्वरुप को जान लें तो संसार के सारे झगड़े छूट जायेंगे। आचार्य जी ने आगे कहा कि वेद पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना परम धर्म है। आप सब स्वयं वेद पढ़िये और अपने बच्चों को सुनाईये।

आचार्य जी ने धर्म की परिभाषा की चर्चा की। उन्होंने कहा कि जो वेद में प्रतिपादित है वही धर्म है। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई धर्म नहीं है। आचार्य जी ने कहा कि वेद से इतर धर्म विषयक मान्यताओं की पुस्तकें मत–मतान्तर तो हो सकती हैं परन्तु धर्म केवल वेद प्रतिपादित व वेदानुकूल मान्यतायें ही होती हैं। आचार्य जी ने महत्वपूर्ण बात यह कही कि वेद में यह भी कहा गया है कि जो अधार्मिक हैं, सत्य के विरुद्ध व्यवहार करते है, उन्हें नष्ट कर दो। यदि वेद के विरुद्ध आचरण किया जायेगा तो धर्म नहीं चल सकता। उन्होंने स्पष्ट किया कि मैं किसी को मारने व कत्ल करने को नही कहता। उन्होंने कहा कि आजकल माताओं व बहिनों के अपहरण हो रहे हैं। यदि मैं शुद्ध व पवित्र हूं, अधर्म के काम नहीं करता तो मैं आधा धार्मिक हूं। आचार्य जी ने राम व कृष्ण के जीवन के उदाहरण दिये। राम ने राक्षसों को मारा। आचार्य जी ने राम की घोषणा सुनाई और कहा कि उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं संसार को निशाचरों से रहित कर दूंगा। आचार्य जी ने कहा कि यदि आप समाज के शत्रुओं का प्रतिकार नहीं करेंगे तो अधर्म व हिंसा बढ़ते जायेंगे। वैदिक धर्म की जय बोलने से कुछ नहीं होगा। आचार्य जी ने कहा कि चोरों व जेब कतरों के भी संगठन बने हुए हैं। डाकुओं के भी संगठन हैं। दिल्ली में कुछ महिलायें संगठित होकर जेबें काटती हैं। आश्चर्य एवं दुःख है कि सत्य को धर्म मानने वाले धार्मिक लोगों के संगठन नहीं है।

आचार्य जी ने श्रोताओं से पूछा कि मन्दिर में यज्ञ करने से क्या होता है? समाज की सफाई आपको करनी होगी। विद्वान आचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि मनु ने धर्म के दस लक्षणों में अहिंसा को नहीं लिखा है। आचार्य जी ने कहा कि अहिंसा के कारण देश कमजोर हुआ है। धार्मिकों के प्रति अहिंसा तथा हिंसकों के प्रति हिंसा करनी होगी। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो हिंसक आपके धर्म का हनन करेंगे। आचार्य जी ने क्षमा को भी धर्म के विपरीत बताया। उन्होंने कहा कि सम्राट पृथ्वी राज चौहान ने मुहम्मद गौरी को अनेक बार क्षमा किया। इसी कारण देश की भारी हानि हुई। आचार्य जी ने कहा क्षमा उसे किया जाता है जो अपने अपराध को स्वीकार करे और उसे न दोहराने की प्रतिज्ञा करे। क्षमा मांगने वाले अपराधी को अपनी प्रकृति को बदलना चाहिये। आचार्य जी ने यह भी कहा कि सत्य समय के अनुसार बदलता है।

आचार्य जी ने कहा कि धर्म का यथार्थ रूप में पालन श्री कृष्ण जी ने किया। उसने सबको ठिकाने लगा दिया। कृष्ण जी से पहले मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने भी राक्षसों को ठिकाने लगाया। विद्वान आचार्य ने कहा कि अधार्मिकों को ठिकाने लगाने पर विचार करना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि कृष्ण जी न होते तो पाण्डव हार जाते। आचार्य जी ने महाभारत से कर्ण व कृष्ण जी के मध्य हुए संवाद को भी प्रस्तुत किया। कृष्ण जी ने कर्ण द्वारा धर्म की बात करने पर उससे पूछा था कि जब अकेले युद्ध कर रहे अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को तुम सबने मिलकर मारा था तब तुम्हारा धर्म कहां गया था? जब तुमने अपने साथियों के साथ मिलकर सभा में सबके सम्मुख द्रोपदी को निर्वस्त्र किया था, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था? आचार्य जी ने कहा कि अधार्मिकों को नष्ट करना ही होगा। देश के कानून के अन्तर्गत या जैसे उचित हो। आचार्य जी ने कहा कि देश व समाज में जो अधर्म व बुराईयां फैल रही हैं, उन्हें दूर करना है। यज्ञ करके हम

आधे धार्मिक बन सकते हैं। आचार्य जी ने वेदमंत्र में आये पद 'अपघ्नन्तो' का उच्चारण कर कहा कि दुष्टों की वृत्ति को अवश्य छुड़ाना पड़ेगा। यह धर्म का स्वरुप है। आचार्य जी ने कहा कि जो व्यक्ति जिसके प्रति जैसा व्यवहार कर रहा है उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करना धर्म है। वैदिक धर्म के आदर्श पुरुष शिवाजी का उल्लेख कर आचार्य जी ने कहा कि हमें यथायोग्य व्यवहार करना होगा। यह धर्म का अंग है। कृष्ण जी ने अपने जीवन में भी यही किया व हमें यही करने की शिक्षा दी है।

आचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि वेद जो कहता है वही धर्म है। उन्होंने कहा कि वेद में परमात्मा ने कहा है कि यदि कोई हमें या हमारे पशुओं की हत्या करता है तो हम उसे शीशे की गोली से मार देंगे। आचार्य जी ने कहा कि आज गाय, घोड़े व मनुष्यों की हत्यायें हो रही हैं। नारियों पर अत्याचार हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि आतंकियों पर तो हमें क्रूर होना ही चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि समाज व राष्ट्र के क्षेत्र में धर्म की परिभाषा में व्यक्तिगत धर्म की अपेक्षा कुछ अन्तर आता है। डा. रघुवीर वेदालंकार जी ने श्रोताओं को प्रेरणा की कि अपने हिन्दू भाईयों में वेद की प्रतिष्ठा कराईये। जब तक वेद की प्रतिष्ठा नहीं करेंगे ईश्वर व वेद की प्रतिष्ठा नहीं होगी। आचार्य जी ने सभी विद्वानों व श्रोताओं को 'वेद पढ़ो और शास्त्रार्थ करो' का मन्त्र दिया और कहा कि इसका सर्वत्र प्रचार करो। इसी के साथ विद्वान आचार्य डा. रघुवीर ने अपने वक्तव्य को विराम दिया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे डा. अजीत आर्य ने कहा कि हमारी क्षमा हमारी कायरता नहीं बननी चाहिये।

वैदिक विद्वान पं. वेद प्रकाश श्रोत्रिय का सम्बोधन-व्याख्यान आरम्भ करते हुए आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द के आने से पूर्व वेद की दुर्दशा हो रही थी, उसे उन्होंने दूर किया। वैदिक विद्वान श्रोत्रिय जी ने अपने मन की कल्पना प्रस्तुत करते हुए कहा कि वह वेद के गौरव को न तो गिरने देंगे और न ही ऋषि दयानन्द के यश को कम होने देंगे। महर्षि दयानन्द ने अपने ब्रह्मचर्य के तप व वेदों के ऋषित्व को प्राप्त कर वेदों के नाम पर लगी कालिमा को धो दिया है। अब वेद पर कोई वेद विरोधी व अज्ञानी दुबारा कालिमा लगाने की कोशिश नहीं कर सकता। आचार्य जी ने २ बीजों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा वेदों की उत्पत्ति वा वेदों का प्रकाश करते हैं। वृक्ष की आकृति की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वृक्ष की जड़ नीचे भूमि के भीतर होती है। उसका तना होता है, शाखायें होती हैं व उसके पत्र व पुष्प आदि होते हैं। इनसे मिलकर वृक्ष बनता व कहलाता है। वृक्ष का आधार उसका बीज होता है अथवा यह कह सकते हैं कि जो वृक्ष होता है वह साकार होने से पूर्व बीज में समाहित होता है। यह समस्त वृक्ष अपने बीज में समाया हुआ होता है। सूर्य, चन्द्र व पृथिवी आदि मूल प्रकृति रूपी बीज से उत्पन्न होती हैं जिसे सृष्टि रूपी वृक्ष की शाखायें कह सकते हैं। बीज रूपी मूल प्रकृति अव्यक्त होती है।

विद्वान आचार्य ने कहा कि जैसे जैसे यह सृष्टि बनती है वैसे वैसे ज्ञान का वृक्ष बनता है। उन्होंने कहा कि ज्ञान रूपी वृक्ष की शाखाओं को केवल योगी ही देख सकता है। ऋषि दयानन्द ने उसे देखा तो उन्हें वेद ज्ञान की ११२७ शाखायें दिखीं। ज्ञान का बीज ईश्वर ही है। आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने बीज का उल्लेख किया और कहा कि उसमें अग्नि घुसती है, केन्द्र बनता है, गति उत्पन्न होती है, उसका व्यास बनता है, मण्डल बनता है आदि। विद्वान आचार्य जी ने कहा कि वृक्ष का पूरा स्वरुप बीज व उसके केन्द्र में समाहित होता है। अग्नि सदा भूखी रहती है। यह समस्त सृष्टि और वेद ज्ञान विषयक सभी शब्द, उनके अर्थ व सम्बन्ध ईश्वर के ज्ञान में सृष्टिकाल व प्रलयकाल दोनों में रहते हैं। आचार्य जी ने कहा कि ज्ञान उत्पन्न नहीं होता। आचार्य जी ने उदाहरण से समझाते हुए कहा कि गायक अपने गीत के अनुसार बाजा, हारमोनियम, ढोलक, तबला आदि, बजाता व बजवाता है। उन्होंने कहा कि बाजे में हिम्मत नहीं कि गायक के गीत की आवश्यकता कुछ और हो और बाजा स्वतः कुछ और धुन बजाये। श्रोत्रिय जी ने कहा कि गायक गीत के आधार पर बाजे को बजाता है और बाजा उसी के अनुसार बजता है। बाजा वैसा ही बजता है जैसा गायक बजाता है व जैसा वह चाहता है। उन्होंने कहा कि जब प्रलय हुई थी तब सृष्टि में कई योगी व ऋषि आदि वेदों के विद्वान थे।

प्रलय होने पर वह सब सो गये थे। प्रलय काल समाप्त होने के बाद प्रलयरूपी रात्रि समाप्त हुई, ईश्वर ने नई सृष्टि को उत्पन्न किया तथा सो रहे ऋषियों व योगियों की निद्रा समाप्त हुई। सृष्टि पूरी बन जाने पर वह जागे। सृष्टि के आरम्भ काल में परमात्मा से वह ऋषि व योगी अमैथुनी सृष्टि के द्वारा पैदा हुए। वैदिक विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि मनुष्य योनि में जीवात्मा के किये हुए कर्म कभी नष्ट नहीं होते। उन्होंने कहा कि परमात्मा गायक है और ऋषि व योगी उसका बाजा व वाद्य यन्त्र हैं। विद्वान वक्ता ने उपमालंकार की सहायता से वेदोत्पत्ति को समझाया। उन्होंने कहा परमात्मा गायक है और ऋषि मुनि व योगी उसका बाजा हैं। परमात्मा ने जैसा गीत गाया वैसा ही स्वरोच्चारण ऋषि व योगी जनों ने बाजे की तरह से किया। श्रोत्रिय जी ने कहा कि परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में ऋषियों को बोलने की प्रेरणा की। आचार्य जी बोले 'अहमेव स्वयं वदामि' परमात्मा कहता है कि मैं ही बोलता हूं। इसके बाद आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने ब्रह्मा जी को वेदज्ञान की प्राप्ति व उसके प्रथम गुरु होने की चर्चा की। उन्होंने कहा कि राम ने जनक की सभा में धनुष को तोड़ा। वहां उपस्थित परशुराम उन पर चढ़ बैठे। लक्ष्मण ने परशुराम को कहा कि आप क्रोध क्यों कर रहे हो? धनुष के टूटने में राम की गलती नहीं है। राम ने तो धनुष को छुआ ही था। यह धनुष राम के छुने से ही टूट गया। श्रोत्रिय जी ने कहा कि राम में बल था। वह विश्वामित्र के यहां पढ़े थे। राम ने कर्म किया। उन्होंने कहा कि तुलसी दास जी ने यहां अतिश्योक्ति अलंकार का सहारा लेकर उस समय के भाव का वर्णन किया है। आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि सृष्टि की उत्पत्ति भाव व कर्म दोनों के आधार व कर्त्ता ईश्वर ने की। आचार्य जी ने ब्रह्मचर्य की महत्ता पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वेदों का ज्ञान हमेशा यथार्थ ही रहता है। यह समस्त पृथिवी व ब्रह्माण्ड के वेद ज्ञान के अनुसार ही बनी है। संसार व वेद ज्ञान में परस्पर एकता है, कहीं विरोध नहीं है। वेद ज्ञान से ही हम संसार को यथार्थ रूप में जान सकते हैं। आचार्य जी ने एक राजा, उसके वृद्ध बीमार हाथी और प्रजाजन सेवक का एक वृतान्त भी सुनाया। राजा ने उस व्यक्ति को कहा था कि हाथी मर जाये तो मुझे सूचना देना। राजा उस व्यक्ति को फांसी पर चढ़ायेगा। कुछ दिनों बाद हाथी मर गया। वह व्यक्ति राजा के पास आया। राजा ने पूछा तो वह कहता है कि हाथी ठीक है पर वह उठता बैठता नहीं, कभी कहता है कि वह कुछ खाता नहीं, फिर कहता है कि वह कई दिनों से मल–मूत्र भी विसर्जन नहीं कर रहा है। अन्त में कहता है कि हाथी तो ठीक है पर उसकी सूंढ में चींटिया चल रही हैं। राजा को गुस्सा आता है और उस व्यक्ति को कहता है कि तू कहता क्यों नहीं कि हाथी मर गया है। वह व्यक्ति कहता है कि महाराज आपने ही कहा है कि हाथी मर गया, यह शब्द मेरे नहीं है। यह मैंने नहीं कहा, महाराज आपने कहा है। मैं यह शब्द नहीं कह सकता। इस संवाद में हमें वह साधारण व्यक्ति व्यवहार कुशल व अपने जीवन की रक्षा करता हुआ दिखाई देता है। राजा अपने ही जाल में फंस जाता है। जो बात उस व्यक्ति को कहनी थी वह उसे स्वयं कह देता है।

अपने व्याख्यान को विराम देते हुए आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने कहा कि जब आचार्य अपने ब्रह्मचारी को वेद ज्ञान और विद्या से सम्पन्न देखता है तो उसे अतीव प्रसन्नता होती है। उन्होंने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को कहा कि तुम अपने आचार्य और इस गुरुकुल की भूमि को मत भूलना। जीवन भर वेद धर्म का पालन और वेद, धर्म और संस्कृति की रक्षा करना। वेद वेदांग सम्मेलन के अध्यक्ष डा. यज्ञवीर ने अपने निष्कर्ष में डा. रघुवीर वेदालंकार और आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी के ज्ञान से पूर्ण व्याख्यानों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि श्रोत्रिय जी ने सृष्टि व ज्ञान के बीज की चर्चा की है। आचार्य यज्ञवीर ने पं. सत्यपाल पथिक जी के भजनों की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि शास्त्र के अनुसार आततायी को मारने में दोष नहीं है। इसी के साथ वेद वेदांग सम्मेलन समाप्त हुआ। इसके बाद सन्ध्या हुई और सभा ऋषिभक्तों के शौच, भ्रमण व रात्रि भोजन के लिए विसर्जित की गई। रात्रि सभा में आर्य भजनोपदेशकों के भजन हुए।

गुरुकुल उत्सव का दूसरा दिन शनिवार २ जून, सन् २०१८–उत्सव के दूसरे दिन प्रातः योगाभ्यास व योगासन

हुए। नियत समय प्रातः ८.०० बजे से ऋग्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ हुआ और समय पर समाप्त किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा डा. सोमदेव शास्त्री जी ने यज्ञ के मध्य में कुछ मंत्रों का आशय स्पष्ट करने के साथ अपने उपयोगी विचार भी प्रस्तुत किये। यज्ञ के बाद कछ समय प्रातराश के लिए अवकाश किया गया। इसके बाद दूसरे दिन का अपराह्न सत्र आरम्भ हुआ। इस सत्र में 'गोकृष्यादि रक्षा सम्मेलन' सम्पन्न किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. रघुवीर वेदालंकार ने की तथा संचालन युवा आर्य विद्वान डा. रवीन्द्र आर्य ने किया। सम्मेलन का आरम्भ पं. सत्यपाल सरल जी के दो भजनों से हुआ। सम्मेलन में पहला व्याख्यान डा. सोमदेव शास्त्री जी का हुआ तथा उसके पश्चात स्वामी धर्मेश्वरानन्द शास्त्री, ठाकुर विक्रम सिंह और अध्यक्षीय भाषण डा. रघुवीर वेदालंकार जी का हुआ। आयोजन के मध्य में आर्यसमाज के विख्यात विद्वान, वैदिक कोष के सम्पादक पं. राजवीर शास्त्री की स्मृति में प्रकाशित एक स्मृति ग्रन्थ का लोकार्पण भी किया गया।

गोकृष्यादि रक्षा सम्मेलन

आर्य विद्वान डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई का सम्बोधन-

आर्य विद्वान डा. सोमदेव शास्त्री, (मुम्बई) का ने अपना सम्बोधन आरम्भ करते हुए कहा कि सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन का आधार विदेशी अग्रेजों द्वारा कारतूसों में गोमाता की चर्बी का प्रयोग करना था। इस स्वतंत्रता आन्दोलन के कारण ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया को यह घोषणा करनी पड़ी थी कि वह भारत की खुशहाली चाहती हैं। ईसाई धर्म को मानने वाला कोई अंग्रेज अधिकारी भारत देशवासियों को ईसाई बनाने का प्रयत्न नहीं करेगा। आचार्य जी ने बताया कि ऋषि दयानन्द ने इंग्लैण्ड की रानी विक्टोरिया की उस घोषणा का खण्डन किया था। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में रानी विक्टोरियां की घोषणा का खण्डन करते हुए कहा कि 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत–मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।' आचार्य सोमदेव जी ने बताया कि ऋषि दयानन्द सन् १८६६ में अजमेर में एक अंग्रेज अधिकारी से मिले थे और उन्हें गोहत्या की हानियां बताई थी और उनसे मांग की थी वह देश में गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने में अपने प्रभाव का सदुपयोग करें। ऋषि दयाननन्द ने गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के लिए देश भर से २ करोड़ लोगों के हस्ताक्षर कराने का एक अभियान भी चलाया था। शास्त्री जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने अपनी लघु पुस्तक 'गोकरुणानिधि' में गायों से होने वाले आर्थिक लाभों की विस्तार से चर्चा की है जो उस समय में उनसे पूर्व किसी विद्वान व समाजसुधारक आदि ने नहीं की थी। आचार्य जी ने ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित 'गोकृष्यादिरक्षिणी सभा' का भी उल्लख किया। उन्होंने कहा कि गोकृष्यादिरक्षिणी सभा की स्थापना का उद्देश्य गाय के दुग्धादि की प्राप्ति सहित उसके बछड़ो से खेती द्वारा किसान को अन्न उत्पादन आदि अनेक आर्थिक लाभ निहित थे। वेदों में गाय की बड़ी महिमा है। गाय सदा हमारा हित करने वाली है।

आचार्य डा. सोमनाथ शास्त्री ने कहा कि गाय के घृत में सोने का अंश पाया जाता है। आचार्य जी ने आर्यसमाज के उच्च कोटि के विद्वान एवं गुरुकुलों के सस्थापक एवं संचालक स्वामी जी का उल्लेख किया और बताया कि उनके अनुसार गाय के दुग्ध की मलाई में पीला रंग सोने के विद्यमान होने के कारण से है। देशी गाय के घृत में सर्प आदि अनेक विषों का नाश करने की शक्ति है। आचार्य जी ने कहा कि सांप काटे व्यक्ति को गोघृत पिलाकर उसके प्राणों की रक्षा होती है। गोमूत्र में भी विष का नाश करने की शक्ति है। गाय का गोबर भी चौका–चूल्हा लगाने में काम आता है। उन्होंने कहा कि गाय के बिना कृषि कार्य करना भी कृषकों के लिए सम्भव नहीं है। बैलों से हल जोतते व अन्य कार्य करते समय उनका मूत्र खेतों में गिरने से अन्न के लिए हानिकारक किटाणुओं का नाश होता था। डा. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि गोरक्षा के लिए हमें गायों को पालना होगा। गाय के गोबर मात्र से ही गाय पर होने वाले व्यय की प्राप्ति उसके स्वामी को हो जाती है। आचार्य जी ने कहा कि गाय के गोबर की खाद

तीन वर्ष तक काम करती है और खेत की मिट्टी उर्वरा बनी रहती है। गाय के गोबर की खाद से भूमि हल्की उपजाऊ बनती है। गाय होगी तभी हमें व हमारी सन्तानों को उसका दूध, घी, छाछ, मट्ठा, मिल्क केक आदि नाना प्रकार के पौष्टिक पदार्थ मिलेंगे। उन्होंने कहा कि गाय का दूध अधिक मात्रा में प्रयोग करने से मल कम बनता है। इस कारण मल के निमित्त से होने वाला वायु व जल प्रदूषण भी कम होता है जिससे रोगोत्पत्ति भी न्यून होती है। आचार्य डा. सोमदेव शास्त्री ने बताया था कि महर्षि दयानन्द ने प्रेरणा देकर अपने शिष्यों से रेवाड़ी में एक वृहद गोशाला की स्थापना कराई थी।

डा. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि वाममार्ग ने पशु हिंसा और मांसाहार को प्रचलित किया व उसे बल दिया। गोमेध के नाम पर प्राचीन भारत में गाय व कुछ अन्य पशुओं पर अत्याचार किया गया। आचार्य जी ने कौशिक नाम के एक प्राचीन आचार्य का उल्लेख कर बताया कि उसने कर्मकाण्ड में मन्त्रों का विनियोग किया है। सायण ने अपनी अज्ञानता के कारण यज्ञ में यजमान द्वारा गाय का वध करने का ही उल्लेख किया। यज्ञ में यजमान की पत्नी मृतक गाय पर जल की छींटे दे, ऐसा विधान किया गया। ऐसा करने से यज्ञ का फल सुख व शान्ति प्राप्त होना बताया जाता है जो कि सर्वथा असत्य है। आचार्य जी ने कहा कि पौराणिक ग्रन्थों में यज्ञों में हिंसा का उल्लेख है। उन्होंने कहा कि वाममार्गी पौराणिक याज्ञिक कहते हैं कि वैदिक हिंसा हिंसा नहीं होती।

डा. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि वाममार्गियों ने यज्ञों में पशुओं की हिंसा चलाई। गांधी जी का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि गांधी जी ने कहा था कि स्वराज्य मिलते ही मैं गोहत्या बन्द करा दूंगा। वह और उनके अनुयायी अपना वचन पूरा नहीं कर पाये। आचार्य जी ने कहा कि हम गोमाता की जय बोलते हैं परन्तु गो को पालते नहीं है। गो को पालेंगे नहीं तो गोरक्षा नहीं हो सकती। आचार्य जी ने गोरक्षा आन्दोलन का भी उल्लेख किया। आचार्य जी ने बताया कि शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ मानते थे कि वेदों में गोरक्षा का विधान है परन्तु वह कभी वह मन्त्र व शब्द दिखा नहीं सके जिसमें यह विधान था। आचार्य जी ने बताया कि ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य में गोरक्षा के विधेय अनेक मन्त्रों का तो उल्लेख है व उनके अर्थ भी दिये गये हैं परन्तु गोहत्या व गो के प्रति हिंसा का कहीं एक शब्द भी नहीं है। महीधर ने यजुर्वेद के मन्त्रों के मिथ्या अर्थ कर गोहत्या किये जाने का उल्लेख किया है। ऐसा महीधर की अज्ञानता आदि के कारण हुआ है। आचार्य जी ने कहा कि पौराणिक जगत के अन्य विद्वान ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य को ही प्रामाणिक मानते हैं वा उसका अनुगमन करते हैं। उन्होंने बताया कि एक बार एक पत्रकार द्वारा शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ से आर्यसमाज से जुड़े गोहत्या पर प्रश्न करने पर उसने कहा था कि यह आर्यसमाज और पौराणिक समाज दोनों की आपसी व घर की लड़ाई है।

आर्य विद्वान डा. सोमदेव शास्त्री ने ऋषि दयानन्द की गोकरुणानिधि पुस्तक में लिखे उन वचनों का भी उल्लेख किया जिसमें उन्होने कहा है कि जब गाय आदि पशु समाप्त हो जायेंगे, उनका मांस नहीं मिलेगा तो तब तुम क्या अपने परिवार के लोगों को मारकर उनका मांस खाया करोगे? आचार्य जी ने दिल्ली के पास हुए निठाई काण्ड की चर्चा की और बताया कि उस व्यक्ति ने सौ से अधिक बच्चों को मारकर उनका मांस खाया था। आचार्य डा. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि ऋषि दयानन्द की हत्या के षडयन्त्र में अंग्रेज सरकार का भी बहुत बड़ा हाथ था। ऋषि दयानन्द जी यदि कुछ वर्ष और जीवित रहते तो वह गोरक्षा के कलंक को देश से दूर कर देते। परमात्मा से प्रार्थना करते हुए डा. सोमदेव शास्त्री ने गोभक्तों को गोमाता की रक्षा की शक्ति देने को कहा। उन्होंने सभी हिन्दुओं व आयसमाजियों को अपने घरों में देशी गाय पालने की प्रेरणा की।

आर्य-प्रतिनिधि-सभा के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती का सम्बोधन- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि देश को गोरक्षा की परम आवश्यकता है। गोरक्षा, गोसेवा तथा गोपालन के बिना देश की रीढ़ कमजोर हो जायेगी। ऋषि दयानन्द ने गोरक्षा के महत्व को अनुभव किया था। ऋषि दयानन्द ने अपनी पुस्तक 'गोकरुणानिधि' में गाय तथा बकरी से मनुष्यों को होने वाले लाभों का

वर्णन किया है। एक गाय को मारकर मांस खाने से एक समय में मात्र ८० लोगों का पेट भरता है वा वह तृप्त हो सकते हैं। इसके विपरीत एक गाय के जीवन भर के दुग्ध आदि पदार्थों से एक समय में लगभग ४ लाख १४ हजार मनुष्यों का भोजन होकर वह तृप्त होते हैं। विद्वान स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि एक गाय अपने जीवन में ८ से १० लाख लोगों का एक समय में पोषण करती है। स्वामी जी ने गोदुग्ध, गोघृत, गोमूत्र, गोबर आदि के लाभों सहित इन पदार्थों के प्रयोग से विष के नाश होने के पक्ष की भी चर्चा कर उस पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि उनके गुरुकुल में एक व्यक्ति को बिजली का करण्ट लग गया था। उसका एक हाथ निष्क्रिय प्रायः हो गया था। उसकी गाय के घृत से मालिश की गई। इसके प्रभाव से उसका हाथ ठीक हो गया।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने अपने गुरु स्वामी ओमानन्द जी द्वारा आंख के फोला रोग की चिकित्सा का उल्लेख किया और बताया कि वह इसका उपचार किया करते थे। इसके लिए रुई की सात बत्तियां बनाकर उन्हें एक कांच की कटोरी में आक के दूध में डूबो कर रखते थे। फिर उसमें देशी गाय का शुद्ध घी भर देते थे और उसे सात दिन इसी प्रकार पड़ा रहने देते थे। सात दिन बाद सात दिनों तक एक–एक बत्ती का सूरमा बनाकर लगाते थे। इसका काजल भी लगा सकते हैं। इस चिकित्सा से आंख का फोला नष्ट हो जाता था।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने सर्प विष चिकित्सा की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि स्वामी ओमानन्द जी ने सर्पदंश के शिकार व्यक्ति को गाय के दूध और गोबर में आकण्ठ खड़ा किया था। इस चिकित्सा से उस व्यक्ति का सर्पदंश का विष ठीक हो गया था। ऋषि भक्त स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने कहा कि गोदुग्ध, गोघृत, गोमूत्र, गोबर आदि से कैंसर के रोगी सहित आंख व अन्य रोगियों की भी चिकित्सा सम्भव है। स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रसिद्ध वैद्य थे। वह इन सभी रोगों की चिकित्सा इसी प्रकार किया करते थे।

स्वामी जी ने बताया कि प्रसिद्ध देशभक्त श्री राजीव दीक्षित जी ने गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए न्यायालय में एक मुकदमा किया था। इस मुकदमे में मुसलमानों ने अपने सात वकील किये थे। मुसलमानों के वकीलों की दलील थी की गाय बूढ़ी हो जाती है तो उन्हें मारने में लाभ है। उन्होंने दलील दी थी कि ऐसा उनके धर्मग्रन्थ में लिखा है। ऐसा न होने पर गायों की जनसंख्या बढ़ेगी। ऐसी अनेक दलीले उन वकीलों ने दी थी। इन दलीलों का प्रमाणों के साथ राजीव दीक्षित जी ने प्रतिवाद किया था। दीक्षित जी ने न्यायालय में गोरक्षा व गोपालन के लाभ बताये और यह भी बताया कि अनेक रोगों में गाय के दुग्ध, घृत, गोमूत्र आदि से चिकित्सा करने पर लाभ होता है। उन्होंने यह भी बताया था कि बिना गाय के दूध, गोबर व गोमूत्र से भी गाय से बहुत से लाभ होते हैं। स्वामी जी ने राजीव दीक्षित जी की दलीलों के आधारत पर बताया कि एक गाय प्रति दिन लगभग १० किलोग्राम गोबर देती है। महीने में एक गाय से लगभग ३०० किग्रा. गोबर प्राप्त होता है। इस गोबर से सबसे उत्तम खाद बनती है जिससे प्राप्त अन्न उत्तम कोटि का होता है। स्वामी जी ने कहा कि एक गाय का गोबर ६ रुपये प्रति किग्रा. के हिसाब से ६० रुपये का होता है। इस प्रकार गाय के गोबर मात्र से ही प्रति दिन ६० रुपये प्राप्त हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि एक गाय का एक दिन का मूत्र लगभग १० लिटर होता है। इसकी प्रतिदिन की कीमत भी लगभग १०० रुपये होती है। स्वामी जी ने कहा कि गोमूत्र से निर्मित ओषधियां आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त लाभकारी होती हैं। उन्होंने गणना कर बताया कि एक गाय के मूत्र से १.०८ लाख रुपये का लाभ होता है। स्वामी जी ने कहा कि गोबर को गैस में बदल कर उससे गाड़िया चलाई जा सकती है और विद्युत भी बनाई जा सकती है।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने बताया कि उत्तर प्रदेश में ४५० गोशालायें हैं। एक ऐसा युवक है जो केवल बूढ़ी गाय ही रखता है। वह युवक केचुआ पालन करता है और गोमूत्र आदि से दवायें बनाता हैं। उसके पास सौ बूढ़ी गायें हैं। वह अपने परिवार का पालन भी करता है और वर्ष में २ लाख रुपये की बचत भी कर लेता है। स्वामी जी ने कहा कि रासायनिक खाद का प्रयोग करने से हमारे खेतों में जहर जा रहा है। हम विषयुक्त

अन्न खाने के लिए मजबूर है। स्वामी जी ने गोबर की खाद का प्रयोग करने की सलाह दी और रासायनिक खाद से उत्पन्न अन्न खाने से लोगों को सावधान किया।

स्वामी जी ने बताया कि तरबूज को भीतर से लाल रंग का करने के लिए जहरीला इंजेक्शन लगाया जाता है। लौकी में भी जहरीला इंजेक्शन लगाया जाता है। इसके प्रभाव से लौकी तीन के बाद खाने के योग्य नहीं रहती। स्वामी जी ने कहा कि गाय के गोबर व गोमूत्र से खेती में प्रयोग किये जाने वाले कीटनाशक बनते हैं। उन्होंने कहा कि मैं भी खेती करता हूं। यह मेरा स्वानुभूत है कि गोबर आदि से बना कीटनाशक उत्तम होता है। स्वामी जी ने कहा कि रासायनिक खाद का प्रयोग कर हम अपने खेतों को बंजर बना रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि गोबर की खाद में केंचुएं अधिक होते हैं। इन केंचुओं से भूमि की उर्वरकता व अन्न उत्पन्न करने की शक्ति में वृद्धि होती है। स्वामी जी ने कहा कि खेती में गोबर की खाद के प्रयोग से हमें विष मुक्त व रोगरहित फसल मिलेगी। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए स्वामी जी ने कहा कि यदि खेती में गोबर की खाद सहित अन्य सभी उपायों का प्रचलन किया जायेगा तो उससे गोरक्षा को बढ़ावा मिलेगा।

वैदिक विद्वान डा. रघुवीर वेदालंकार जी का सम्बोधन-अपना सम्बोधन आरम्भ करते हुए डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि गोरक्षा की जानी चाहिये। हमें उसकी योजना बनानी चाहिये। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में गोरक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए इसके आर्थिक पक्ष को आधार बनाया था। हमारे विरुद्ध ईसाई, मुसलमान, हिन्दू व अन्य लोग खड़े हैं। कुछ न्यायाधीश भी गोमांस खाते हैं। कुछ सार्वजनिक रूप से कहते हैं कि गोमांस उन्हें अच्छा लगता है। मुसलमान कहते हैं कि गोमांस खाना उनका अधिकार है। वह कुरान का हवाला देते हैं और कहते हैं कि उसमें गोमांसाहार का विधान है। आचार्य रघुवीर जी ने कहा कि हिन्दू क्यों नहीं कहता कि ईश्वर से प्राप्त संसार के आदि ग्रन्थ धार्मिक ग्रन्थ वेदों में गोरक्षा का विधान है तथा गोहत्या व गोमांसाहार का विधान नहीं है। विद्वान वेदाचार्य ने कहा कि हमें एकजुट होना होगा। गोहत्या का होना और गोरक्षा के नाम पर हिन्दुओं का एक जुट न होना हमारे लिए शर्म की बात है। उन्होंने कहा कि शंकराचार्य स्वामी दयानन्द जी की कुछ बातों को स्वीकार करते हैं। ऐसे भी हिन्दू हैं जो कहते हैं कि वेदों में गोहत्या का विधान है। डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि हमें गाय से होने वाले आर्थिक लाभों को प्रमाणों के साथ प्रस्तुत करना होगा। केवल भाषण देने से काम नहीं चलेगा। उन्होंने कहा कि स्वामी रामदेव जी इस काम को कर सकते हैं। विद्वान वक्ता ने कहा कि गुरुकुल भी इस काम को कर सकता है। आचार्य जी ने कहा कि आजकल हिन्दू गाय कम तथा भैंस को अधिक पालते हैं। आचार्य जी ने कहा कि गाय का दूध सस्ता और भैंस का दूध गाय के दूध से महंगा बिकता है और फिर भी हिन्दू भैंस का दूध लेना पसन्द करते हैं। आचार्य जी ने गाय के दूध के गुणों को लोगों में प्रचारित करने को कहा। गाय का घृत खाने की आचार्य जी ने लोगों को सलाह दी। उन्होंने कहा कि गाय के दूध व घी को खाने से फैट, मोटापा या रक्त में कोलेस्ट्राल नहीं बढ़ता। मैं गाय का दूध पीता हूं और गाय का घी भी यथेष्ट खाता हूं। आचार्य जी ने बताया कि वह अपने परिवार के सभी सदस्यों को भी गाय का दूध पिलाते हैं। हम सब मन, मस्तिष्क और हृदय से शुद्ध, बलवान व स्वस्थ हैं। हमें कोई रोग नहीं हो सकता। आचार्य जी ने गाय के दूध व उससे बनी दही, मक्खन व घृत आदि के सेवन करने का प्रचार करने की सलाह दी।

वेदाचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार जी ने कहा कि गाय मनुष्य की माता के समान मनुष्यों का उपकार व हित करती है। गाय माता से होने वाले उपकारों का प्रचार आर्यसमाज को करना चाहिये। उन्होंने कहा कि भूमि भी हमारी माता के समान है। वह अपने गोबर की अमृतोरूपी खाद के द्वारा अन्न व ओषधियुक्त वनस्पतियां प्रदान कर हमारा उपकार व पालन कर रही है। गाय का दूध हिन्दू व मुसलमान दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी, हितकर व लाभप्रद है। इसका भी प्रचार किया जाना चाहिये। राष्ट्रीय पक्ष की चर्चा कर विद्वान आचार्य जी ने कहा कि गोमांस का निर्यात निरन्तर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि गोमांस के निर्यात पर रोक लगनी चाहिये। उन्होंने इसके लिए आर्यसमाज को संघर्ष करने की सलाह

दी। जब तक धर्म को कर्म रुप में परिणत नहीं किया जायेगा, कोई लाभ नहीं होगा। उन्होंने गोरक्षक विषयक वेद और ऋषियों के विचारों को आचरण में लाने की सलाह दी। आचार्य जी के पूछने पर लोगों ने हाथ उठाकर सहमति दी कि वह भविष्य में गोमाता का ही दूध पीयेंगे और घी खायेंगे। आचार्य जी ने कहा कि गोमाता का दूध व घी आपको स्फूर्ति देगा और इससे आपके मस्तिष्क को लाभ होगा। यह आपको और आपकी सन्तानों को चिरंजीवी बनायेगा।

आचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार जी ने कहा कि गाय के दूघ में जो गुण हैं, वैसे गुण किसी अन्य पशु के दूध में नहीं हैं। आचार्य जी ने कहा कि दूध न देने वाली बूढ़ी गायों से होने वाले लाभों को आपको जानना चाहिये और उन की रक्षा में भी योगदान करना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि गाय पालिये और इसके दूध का घी बनाईयें। गाय का घृत भैंस के घृत से महंगा मिलता है। उन्होंने कहा कि छाछ भी अमृत के समान है। गाय का दूध अधिक हो तो उसे बेचिये मत, उसका घी बनाईये और स्वयं व परिवार को सेवन कराईये। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए आचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि गाय से होने वाले आर्थिक लाभों को जानिये और उसका प्रचार कीजिये। यह कार्य बहुत जरुरी है।

ऋषिभक्त ठाकुर विक्रम सिंह जी का सम्बोधन–गोरक्षा सम्मेलन को ठाकुर विक्रम सिंह जी ने सम्बोधित करते हुए ऋषि भक्त महात्मा लट्टूर सिंह जी की चर्चा की। उन्होंने बताया कि उनका जन्म मोह खास ग्राम में हुआ था। उनका कद ६'२'' था। वह प्रतिदिन ५ सेर दूध पीते थे। गाय के ५ सेर दूध की खीर खाते थे। रामपुर में उनका प्रवचन हो रहा था। अपने प्रवचन में उन्होंने कहा कि गाय के दूध में ताकत है मांस में नहीं। व्याख्यान में उपस्थित एक पहलवान मोहम्मद वली खां खड़ा हुआ। उसने कहा कि मैं गोमांस खाता हूं। उसने महात्मा जी को चुनौती दी कि फैसला हो जाये कि गाय के दूध में ताकत है या माय के मांस में। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कहा कि कायर व कमजोर आजादी के बाद पैदा हुए। पहले सब दण्ड बैठक करते थे। महात्मा जी कुश्ती लड़ने को तैयार हो गये। रामपुर के नवाब मुहम्मद शौकत अली वहा उपस्थित थे। तय हुआ कि आरपार की कुश्ती होगी। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने बताया कि मुहम्मद वली खां विश्व प्रसिद्ध पहलवान गामा के जोड़ का पहलवान था। वह उससे कुश्ती लड़ चुका था। महात्मा जी के शरीर में गाय के दूध का बल व शक्ति थी। उन्होंने अपने से ज्यादा वजन के पहलवान को ३ मिनट की कुश्ती में अपने हाथों से ऊपर उठा लिया और उसे जमीन पर पटक दिया। तीन दिन बाद इस पहलवान की मृत्यु हो गयी। उसकी पसलियां टूट गयीं थीं। इससे गाय के दूध व उसकी शक्ति का अनुमान किया जा सकता है। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने यह भी बताया कि महात्मा लट्टूर सिंह जी व आचार्य भीष्म जी उनके घर पर आया करते थे। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने बताया कि गाय के दूध में अनेक गुण हैं। उन्होंने कहा कि उनके पुत्र व पुत्रियों की लम्बाई अपने माता–पिता से अधिक है। बच्चों की लम्बाई बढ़ाने के लिए उन्होंने बचपन से उन्हें गोदुग्ध का सेवन कराया है। उन्होंने अपने बच्चों को हृष्ट–पुष्ट रखने तथा उनकी लम्बाई आदि बढ़ाने के लिए उन्हें जन्म से ही देशी गाय का दूध व घृत का सेवन कराने की सलाह दी।

ठाकुर विक्रम सिंह जी ने बताया कि सन् १९६६ में गोरक्षा आन्दोलन चला था। दिनांक ७ नवम्बर सन् १९६६ को दिल्ली में पार्लियामेन्ट चौक पर एक विशाल सभा की गई थी। यहां पर आर्यसमाज के विद्वान नेता एवं सांसद स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती जी का सम्बोधन हुआ था। उन्होंने सभा में कहा था कि सरकार को आज गोहत्या बन्द करनी होगी। उनके व अन्य नेताओं के निर्णय के अनुसार संसद को गोभक्तों ने चारों ओर से घेर लिया था। उन दिनों श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधानमंत्री थी। उस भीड़ पर बरबरतापूर्वक निहत्थे गोभक्तों व साधुओं पर गोलियां चलाई गईं। वहां पर ३५० लाशों को गिना गया था। विद्वान वक्ता ने कहा कि आजादी के बाद से गोभक्तों के साथ ऐसा ही होता आ रहा है। उन्होंने श्रोता गोभक्तों को कहा कि ७ नवम्बर, १९६६ के उस दिन को हमेशा याद रखना। ऋषि भक्त विद्वान ने गोमाता पर एक भावपूर्ण कविता का पाठ किया जिसका

मुख्य भाव था कि गाय का पालन किया करों तभी गाय की रक्षा होगी।

वैदिक कोश के रचयिता पं. राजवीर शास्त्री की स्मृति में एक स्मृति-ग्रन्थ का लोकार्पण

गुरुकुल पौंधा देहरादून के वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन आज २–६–२०१८ को कीर्तिशेष पं. राजवीर शास्त्री जी पर एक स्मृति–ग्रन्थ का लोकार्पण किया गया। ग्रन्थ को 'आर्ष परम्परा के संवाहक पं. राजवीर शास्त्री' नाम दिया गया है। स्मृति ग्रन्थ के सम्पादक हैं यशस्वी वैदिक विद्वान डा. दिनेश चन्द्र शास्त्री। डा. शास्त्री गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में वेद विभाग के प्रोफेसर हैं। जिन विद्वानों ने मिलकर पुस्तक का लोकार्पण किया उनके नाम हैं स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डा. रघुवीर वेदालंकार, डा. सोमदेव शास्त्री मुम्बई, पं. धर्मपवाल शास्त्री, पं. इन्द्रजित् देव, ठाकुर विक्रम सिंह, ब्र. नन्द किशोर, डा. यज्ञवीर, श्री वीरेन्द्र शास्त्री, श्री कल्याण देव वेदि एवं डा. धनंजय आर्य आदि। स्मृति ग्रन्थ में लगभग ७०० पृष्ठ हैं। ग्रन्थ में पं० राजवीर शास्त्री जी के जीवन के अनेक चित्र भी हैं। पुस्तक का विषयानुक्रम क्रमश इस प्रकार है। मंगलाचरण, सम्पादकीय, वंशवृक्ष, विद्या–वंशावली, शुभकामनाएं, आचार्य राजवीर शास्त्री जीवन वृत्त वनिका, श्रद्धांजलि–सुमन, संस्मरण (स्मृतियों के वातायन से), व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व, सारस्वत–साधना, प्रशस्ति पत्र/प्रमाण पत्र (अभिनन्दन) और चित्रवीथिः।

पुस्तक विमोचन से पूर्व आचार्य डा. धनंजय जी ने पं. राजवीर शास्त्री जी का परिचय दिया। उन्होंने आचार्य राजवीर जी के गुणों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि वह विशुद्ध मनुस्मृति के प्रथम व्याख्याता थे। उन्होंने अपने जीवन काल में गुरुकुल पौंधा को अनेक बार आशीर्वाद दिया और यहां रहकर ब्रह्मचारियों को अनेक विषयों का अवैतनिक अध्यापन कराया। उन्होंने कहा कि आचार्य जी ने गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली और गुरुकुल नरेला को भी अपना आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्य धनंजय जी ने डा. दिनेशचन्द्र शास्त्री, आचार्य राजवीर शास्त्री जी के पुत्र श्री विनय कुमार, श्री संजय कुमार एवं श्री अजय कुमार जी की स्मृति ग्रन्थ के सम्पादन व प्रकाशन के लिए भूरि भूरि प्रशंसा की।

आर्य विद्वान डा. दिनेश चन्द्र शास्त्री का स्मृति-ग्रन्थ के लोकार्पण से पूर्व सम्बोधन-डा. दिनेश चन्द्र शास्त्री ने पं. राजवीर शास्त्री और स्मृति–ग्रन्थ का परिचय देते हुए कहा कि पंडित जी का देहावसान २५ सितम्बर, २०१४ को हुआ था। उन्होंने कहा कि मोदीनगर में शोकसभा में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी भी उपस्थित थे। सभी उपस्थित विद्वानों ने एक स्वर से कहा था कि पं. राजवीर शास्त्री जी पर एक स्मृति–ग्रन्थ का प्रकाशन होना चाहिये। डा. दिनेश शास्त्री जी ने कहा कि वह चाहते थे कि डा. धनंजय इस ग्रन्थ को तैयार करतें। डा. धनंजय जी पर गुरुकुल पौंधा को उन्नति के मार्ग पर चलाने का भार है। यह कार्य अत्यन्त कठिन एवं परिश्रम साध्य है। इसके लिए आचार्य धनंजय जी को कठोर तप करना पड़ता है। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी का आशीर्वाद उनको प्राप्त है और वह गुरुकुल पौंधा को सफलता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। इस कारण मैंने इस भार को स्वयं वहन किया।

इस ग्रन्थ की सामग्री के लिए मैंने आर्यजगत के अनेक विद्वानों से सम्पर्क किया। सन् २०१४ में ही ग्रन्थ सम्पादन का कार्य आरम्भ किया। काम में बहुत उतार–चढ़ाव आये। कुछ विद्वानों से लेख एवं इच्छित सामग्री शीघ्र प्राप्त हुई तो कई विद्वानों ने लेख भेजने में समय लिया। आचार्य डा. दिनेश शास्त्री जी ने कहा कि आचार्य राजवीर शास्त्री जी ने लगभग ४२ वर्षों तक दयानन्द–सन्देश का सम्पादन किया था। उन्होंने कहा कि अस्सी प्रतिशत फाहलें मुझे डा. धनंजय जी ने उपलब्ध कराईं। लगभग ७०० पृष्ठों का यह ग्रन्थ बना है। उन्होंने बताया कि स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने दो लेख भेजे हैं। आचार्य दिनेश शास्त्री जी ने यह भी बताया कि पं. राजवीर शास्त्री जी के एक भाई जीवित हैं परन्तु वह अस्वस्थ होने के कारण नहीं आ सके। शास्त्री जी ने यह भी बताया कि पं. राजवीर शास्त्री जी की जन्म भूमि मुरादपुर जट्ट है। शास्त्री जी एक उच्च कोटि के कवि भी थे। यदि उन पर अन्य कार्यों का भार न होता तो वह एक महाकाव्य भी लिख सकते थे। शास्त्री जी ने कहा

कि पं. राजवीर शास्त्री जी ने हस्तलिखित पत्रिका भी निकाली थी। उन्होंने गुरुकुल की हस्तलिखित पत्रिका 'अन्तर्ज्वाला' का उल्लेख भी किया। उन्होंने बताया कि पंडित राजवीर जी की संस्कृतभाषायां विषयक एक कविता उन्हें मिली जिसका स्मृति–ग्रन्थ में उपयोग किया गया है। डा. दिनेश शास्त्री जी ने बताया कि ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी सन् १९८३ में अजमेर में मनाई गई थी। इस अवसर पर स्वामी डा. सत्यप्रकाश सरस्वती जी के सम्पादन में एक स्मारिका का प्रकाशन हुआ था। इस स्मारिका में भी पं. राजवीर शास्त्री जी का एक महत्वपूर्ण लेख देखने को मिला है। दिनेश जी ने बताया कि पं. राजवीर जी ने मेधाव्रत जी से कविता करना सीखा था। शास्त्री जी ने पं. दामोदर सातवलेकर जी के यहां से कविता ज्ञान की परीक्षा पास की थी। शास्त्री जी ने तटस्थ भाव से ४२ वर्षों तक दयानन्द–सन्देश मासिक पत्र का सम्पादन किया। शास्त्री जी का समस्त लेखन १०,००० दस हजार पृष्ठों में बैठता है। शास्त्री जी के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि उनका व्यक्तित्व एक सेवक के समान दिखाई देता है। दिनेश जी ने बताया कि वह एक बार शास्त्री जी के साथ सिसौली एक आयोजन में गये थे। वहां उन्होंने टिकैत जी को देखा। वह उन्हें पहचान नहीं सके। शास्त्री जी ने उनका भ्रम दूर किया और कहा कि यह किसान नेता श्री महेन्द्र सिंह टिकैत हैं। उन्होंने बताया कि शास्त्री जी ने वहां प्रवचन भी किया था। नाम के साथ जी का प्रयोग करने की परम्परा के सम्बन्ध में उन्होंने शास्त्री जी की ऊहा से परिचित कराया। उन्होंने कहा कि उनके अनुसार आर्य को अज भी कहते हैं। अज शब्द का अजी बना और बाद में उसका अ विलुप्त होकर जी रह गया। इस प्रकार नाम के साथ जी लिखने की परम्परा आरम्भ हुई जो जी के आर्य अर्थ को सूचित करती है। डा. दिनेश शास्त्री जी ने कहा कि आचार्य राजवीर शास्त्री जी प्रतिभाशाली विद्वान थे। उन्होंने कहा कि यह ग्रन्थ और इसकी सामग्री भावी पीढ़ियों के लिए उपयोगी एवं लाभप्रद होगी, इस उद्देश्य से इस ग्रन्थ का सम्पादन किया गया है। डा. दिनेश शास्त्री जी ने अपने वक्तव्य को विराम देते हुए स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, डा. वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डा. यज्ञवीर जी, श्री इन्द्रजित् देव जी का ग्रन्थ के सम्पादन में सहयोग करने के लिए धन्यवाद किया। आज के लोकार्पण कार्यक्रम में शास्त्री जी के दो पुत्र भी उपस्थित थे। इस प्रकार गोकृष्यादि रक्षा सम्मेलन एवं पं. राजवीर शास्त्री ग्रन्थ का लोकार्पण सम्मान होने के साथ इस सत्र का सत्रावसान हुआ।

उत्सव का दूसरे दिन का अपराह्न सत्र– उत्सव के दूसरे दिन सायंकालीन सत्र में अपरान्ह ३.३० बजे से ऋग्वेदपारायण यज्ञ इस यज्ञ के ब्रह्मा डा. सोमदेव शास्त्री के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में सम्पन्न किया गया। यज्ञ के बाद श्री रमेश चन्द्र स्नेही का एक भजन 'वेद पढ़ा जाये और हवन किया जाये, ऐसे ही परिवार को स्वर्ग कहा जाये' सुनाया। पं. नरेश दत्त जी के भी भजन हुए। उनका पहला भजन था 'वेद पढ़ो और पढ़ाया करो वेद सुनो और सुनाया करो।' नरेश दत्त जी ने दो अन्य भजन भी प्रस्तुत किये। इस सत्र में पं. वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डा. महावीर अग्रवाल, डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार तथा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के सम्बोधन हुए। इस सत्र में विद्वानों द्वारा दिए प्रवचन प्रस्तुत हैं।

वैदिक विद्वान पं. वेद प्रकाश श्रोत्रिय का सम्बोधन–अपने सम्बोधन के आरम्भ आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि विद्या ऐसी चीज है जिसे सारी दुनिया चाहती है। उन्होंने कहा कि सौभाग्यशाली मनुष्य वह होता है जिसे विद्या चाहती है। विद्वान वक्ता ने उन विद्वानों का वर्णन किया जो विद्या को चाहते थे। उन्होंने कहा कि इसके विपरीत विद्या ने महर्षि दयानन्द का उनके जीवन के समस्त गुणों के कारण वरण किया था। आचार्य श्रोत्रिय जी ने कहा कि कि ऋषि दयानन्द ने अपनी विद्या के कारण समस्त विश्व को आलोकित किया था। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द की विद्या का संसार के विद्वानों ने लोहा माना था। आचार्य जी ने अपनी न्यूजीलैण्ड यात्रा और वहां एक विश्वविद्यालय में व्याख्यान दिये जाने का उल्लेख किया। विश्वविद्यालय के डीन ने श्रोत्रिय जी से उनकी योग्यता को जानने के लिए कुछ प्रश्न किये। इस पर श्रोत्रिय जी ने कहा कि भारत प्राचीन काल से सभी परा व अपरा विद्यायों का केन्द्र

रहा है। श्रोत्रिय जी ने उन्हें कहा कि यदि तुम मेरी परीक्षा लेते हो तो इसका यह अर्थ है कि सूर्य पूर्व से नहीं पश्चिम में उदय होता है। ऐसा कभी नहीं हो सकता। आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि प्राचीन भारत में हमारे ऋषि व विद्वान जिस मार्ग पर चलते थे उसी मार्ग पर सारा संसार चलता था। उन्होंने कहा कि सूर्य पूर्व दिशा से उदित नहीं होता अपितु सूर्य जिस दिशा में उदित होता है उस दिशा को ही पूर्व दिशा कहा जाता है। विद्वान आचार्य ने कहा कि वेद ज्ञान के सूर्य हैं। वेदों का उदय भी भारत में ही हुआ था। उनसे प्रश्न किया गया था कि ब्रह्माण्ड कुल कितने तत्वों से मिलकर बना है। आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने बताया कि उन्होंने उत्तर में कहा कि वेदों के अनुसार ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कुल ३,३४२ तत्वों से मिलकर हुई है। आचार्य श्रोत्रिय जी ने कहा कि यदि समस्त ऋषियों के स्वरुप को देखना चाहते हैं तो आपको ऋषि दयानन्द के स्वरुप को देखना होगा। इससे आपको समस्त ऋषियों का स्वरुप विदित हो जायेगा। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द के वेद गुरु और योग गुरु अलग अलग थे। ऋषि दयानन्द ने मथुरा में दण्डी गुरु स्वामी विरजानन्द जी ने संस्कृत का आर्ष व्याकरण पढ़ा था। स्वामी दयानन्द एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो बिना परम्परा के महर्षि बने थे। उनके पास ऋषि बनने के अनुरुप आचार्य भी नहीं थे। दयानन्द जी अपने पुरुषार्थ से ऋषि बने इसलिए मैं दयानन्द जी को महर्षि दयानन्द कहूंगा।

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने स्वामी दयानन्द के मथुरा में गुरु विरजानन्द जी से संस्कृत व्याकरण के अध्ययन का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि जब प्रथम स्वामी दयानन्द गुरु विरजानन्द जी की कुटिया पर पहुंचे थे तब कुटिया के भीतर से विरजानन्द जी ने पूछा था, बाहर कौन है? इसका उत्तर स्वामी दयानन्द जी ने यह कहकर दिया था कि यदि मुझे यह पता होता कि मैं कौन हूं, तो मुझे आपके पास आने की आवश्यकता नहीं थी। श्रोत्रिय जी ने अलंकारिक भाषा का प्रयोग करते हुए कहा कि जिस दिन स्वामी विरजानन्द जी ने दयानन्द के लिए अपनी कुटिया का द्वार खोला था उस दिन यह द्वार कुटिया का नहीं वरन् भारत के सौभाग्य का द्वार खुला था। श्रोत्रिय जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने अपने वेद और शास्त्रों के ज्ञान के प्रकाश से सारे संसार को प्रकाशित किया। स्वामी दयानन्द ने लोगों की धमनियों वा जीवन में धर्म के यथार्थ स्वरूप का संचार किया था।

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि दयानन्द के समय व उनसे पूर्व के सहस्रो शताब्दियों के काल में कोई योगी था, कोई विद्वान था, परन्तु ऋषि कोई नहीं था। उन्होंने कहा कि एक दयानन्द ही था इस समस्त पृथिवी पर जो पूर्ण ब्रह्मचारी, पूर्ण योगी और पूर्ण ऋषि था। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द ने वाममार्गियों द्वारा वेदों पर लगाई कालिमा को सदा के लिए धो दिया। उन्होंने कहा कि दयानन्द जी का नाम लेने से हमें दुनिया सुरक्षित लगती है। श्रोत्रिय जी ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन के अनेक पहलुओं का वर्णन किया। आचार्य श्रोत्रिय जी ने गुरुकुलों व वहां संस्कृत व्याकरण एवं वेद विद्या के अध्ययन–अध्यापन का उल्लेख किया। गुरुकुल पौंधा के आचार्य डा. धनंजय जी को सम्बोधित कर उन्होंने कहा कि धनंजय! वेद विद्या की सुरक्षा करना तेरा काम है। तुम मर जाना पर वेद विद्या की रक्षा से कभी समझौता मत करना। ऋषि दयानन्द के बताये वेद विद्या अध्ययन–अध्यापन के उपदेशों से ही तुम्हारा मार्ग प्रशस्त होना चाहिये। आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने आगे कहा कि जब समाज के लोग गुरुकुल के वेद विद्या से सम्पन्न ब्रह्मचारियों को देखेंगे तो वह कहेंगे कि माता–पिता की आवश्यकता तो जन्म देने के लिए है परन्तु गुरुकुल के आचार्य व उसकी कोख में ब्रह्मचारी की माता व पिता दोनों का समावेश है जो किसी सन्तान को वेद विद्या से आलोकित व प्रकाशित कर सकती है। आचार्य श्रोत्रिय जी ने कहा कि आंख वस्तु या पदार्थ का दर्शन कराती है। पिता अपने पुत्र पर स्नेह दिखाता है। ब्रह्मचारी की माता भी अपने पुत्र पर स्नेह व आशीर्वादों की वर्षा करती है। आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने आचार्य धंनजय जी को कहा कि तुम गुरुकुल में दयानन्द जी की शिक्षाओं के अनुरुप ब्रह्मचारियों का निर्माण करना। ऐसे आचार्य के पीछे चलकर हम धन्य हो जायेंगे।

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने अलंकारिक भाषा

का प्रयोग करते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द के सामने सब उत्तमोत्तम विशेषण हाथ जोड़े खड़े हैं। दयानन्द जी अपने नाम के साथ कोई विशेषण नहीं लगाते। वह विशेषण कहते हैं कि दयानन्द हम तेरे साथ लग कर प्रकाशित हो जायेंगे, हमें अपने नाम के साथ लगा लो। श्रोत्रिय जी ने कहा कि दयानन्द जी ऐसे विलक्षण महापुरुष थे जो सभी एषणाओं से सर्वथा मुक्त थे। इन्हीं शब्दों के साथ पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने अपने वक्तव्य को विराम दिया।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. महावीर अग्रवाल का सम्बोधन- उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डा. महावीर अग्रवाल ने अपने व्याख्यान के आरम्भ में कहा कि यदि दयानन्द भारत भूमि पर न आते तो न तो हम व्याख्यान देते और न आप उन व्याख्यानों को सुन पाते। हमें यह वेदों व देश हित के व्याख्यान देने व सुनने के अवसर प्राप्त न होते। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन का सर्वस्व वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा, देश की स्वतन्त्रता और उन्नति आदि कार्यों के लिए समर्पित किया। आचार्य जी ने कहा कि वर्तमान में भी देश के आकाश में काली घटायें छायी हुई हैं। जिन धार्मिक एवं सांसारिक शिक्षाओं से मनुष्य का जीवन बनता है वह ज्ञान व शिक्षायें न जाने कहां खो गयीं हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में यदि आशा कि कहीं कोई किरण है तो वह केवल हमारे ऋषि दयानन्द जी की पाठ विधि पर चलने वाले आर्ष गुरुकुल व गुरुकुलीय परम्परा हैं। आचार्य महावीर अग्रवाल जी ने कहा कि यदि आप देश के भौतिक विकास से समूचे भारत की उन्नति का अनुमान करते हैं तो यह सम्भव नहीं है। उन्होंने कहा कि देश का निर्माण तब होगा जब देश में चरित्रवान आचार्य व युवक होंगे। आज स्थिति इसके सर्वथा प्रतिकूल है। डा. महावीर अग्रवाल ने कहा कि आप गुरुकुल पौन्धा देहरादून के रुप में वैदिक धर्म एवं संस्कृति का एक उज्ज्वल केन्द्र देख रहे हैं। आचार्य महावीर जी ने आज के समाज में धन के महत्व की चर्चा की। उन्होंने आज के समाज में धन को अधिक महत्व देने से उसके दुष्परिणाम का एक उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि एक आर्थिक दृष्टि से समृद्ध धनवान परिवार में एक मां और उसका एक पुत्र था। मां मुम्बई के एक फ्लैट में रहती थी। मुम्बई में इस परिवार के दो फ्लैट थे जिनका मूल्य करोड़ो रुपये है। पुत्र अमेरिका में रहता था। जब अन्तिम बार पुत्र भारत आया तो मां ने अपने पुत्र से विनती की कि उसका मन घर में अकेले रहकर लगता नहीं है। उन्होंने अपने पुत्र को कहा कि या तो तू मुझे अमेरिका अपने साथ ले चल या फिर भारत में किसी वृद्ध आश्रम में रखवा दे। पुत्र ने कहा कि मुझे अमेरिका जल्दी जाना है। मैं जल्दी आऊंगा, तब इस समस्या को हल करेंगे। पुत्र अमेरिका चला गया और वहां जाकर ऐसा व्यस्त हुआ कि मां से हुई बातों को भूल गया। इधर मां मुम्बई के अपने फ्लैट में जैसे तैसे रहती रही। एक वर्ष से भी अधिक हो जाने पर पुत्र को मां की याद आई। उसे लगा कि यदि वह मुम्बई के अपने दोनों फलैट बेच दे तो उसे करोड़ों रुपये का धन प्राप्त हो जायेगा। वह भारत आया। घर पहुंच कर उसने फ्लैट का दरवाजा खटखटाया परन्तु अन्दर से कोई उत्तर नहीं मिला। उसने पड़ोसियों से पूछा तो उन्होंने बताया कि कई महीनों से उन्होंने बुढ़िया को नहीं देखा है। पुलिस बुलाई गई और दरवाजे को तोड़ा गया। दरवाजे के पीछे बुढ़िया का शरीर नहीं अपितु हड्डियों का अस्थि पंजर पड़ा मिला। कई महीने पहिले ही बुढ़िया की मृत्यु हो चुकी थी। आचार्य महावीर जी ने पूछा कि यदि यही धन है तो फिर दुःख कैसा होगा?

आचार्य महावीर अग्रवाल जी ने कहा कि देश को सुखी व समृद्ध बनाने का उपाय गुरुकुल है। उन्होंने बड़ी संख्या में उपस्थित श्रोताओं को कहा कि अपनी सन्तानों को गुरुकुल में पढ़ायें। ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उन्होंने कहा कि भगवान भारत में ऐसा दिन लायें जब घर–घर में वेदों की ऋचायें गूंजे। इसी के साथ आचार्य महावीर जी ने अपने वक्तव्य को विराम दिया।

गुरुकुल के प्रशंसक एवं सहायक विधायक श्री सहदेवसिंह पुण्डीर का सम्बोधन- उत्सव में उपस्थित स्थानीय विधायक श्री सहदेव सिंह पुण्डीर जी का सम्बोधन भी हुआ। उन्होंने कहा कि मैं गुरुकुल में वेदों के ज्ञान और संस्कारों की शिक्षा देने के लिए आचार्य डा. धनंजय जी का आभार

व्यक्त करता हूं। विधायक जी ने आज के माता–पिता की समस्याओं का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि आज कल बहुत से लोगों के पुत्र व पुत्रियां विदेशों में रहते हैं। ऐसे लोगों के माता–पिताओं की सेवा करने वाला कोई नहीं है। विधायक जी ने कहा कि हमारे बच्चे अपने धर्म और संस्कृति की जानकारी नहीं रखते। वह पाश्चात्य संभ्यता से प्रभावित हो रहे हैं। इस कारण वह अपने वैदिक धर्म और संस्कृति की उपेक्षा करते हैं। विधायक श्री सहदेव सिंह पुण्डीर जी ने अपनी विधायक निधि से गुरुकुल को निर्माण कार्यों के लिए पांच लाख रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा निकटवर्ती स्थानों, हमारे जनपद सहित देश भर में वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रचार प्रसार हो इसके लिए मैं गुरुकुल, इसके आचार्य और आप सबको अपनी शुभकामनायें देता हूं।

आर्य विद्वान डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार का सम्बोधन– आर्यसमाज के विद्वान एवं अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थों के सम्पादक डा. विनोद चन्द्र विद्यालंकार जी ने भी सभा को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि मुझे यहाँ अपार भीड़ देखकर गुरुकुल कांगड़ी के पुराने समय के उत्सवों की स्मृति ताजा हो गई है। मैं इस गुरुकुल और यहाँ ऋषिभक्तों की भारी संख्या देखकर आह्लादित हो रहा हूं। वर्षों बाद मैंने आर्यों का ऐसा विशाल जनसमूह देखा है। उन्होंने कहा कि आज देश को गुरुकुलीय शिक्षा की आवश्यकता है। आचार्य डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी ने गुरुकुलों में पढ़ाये जाने वाले सीबीएसई पाठक्रमों की आलोचना की। उन्होंने कहा कि गुरुकुल पौंधा के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने देश में नौ गुरुकुलों की स्थापना की है। वह उनका सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं। इन गुरुकुलों में एक कन्या गुरुकुल भी है। इन महद् कार्य को करके व गुरुकुलों को सफलतापूर्वक चलाकर स्वामी जी ने एक आदर्श एवं प्रशंसनीय कार्य किया है। उन्होंनें प्रसन्नता के शब्दों में कहा कि स्वामी प्रणवानन्द जी के सभी गुरुकुलों में आर्ष व्याकरण पद्धति से शिक्षा दी जा रही है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भी स्वामी दयानन्द जी की भावना के अनुसार संस्कृत भाषा की आर्ष व्याकरण की शिक्षा देने के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना व उसका संचालन किया था। डा. विनोद विद्यालंकार जी ने कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि गुरुकुल पौंधा उस परम्परा में चल रहा है। स्वामी प्रणवानन्द जी और आचार्य डा धनंजय जी को आर्ष पद्धति से गुरुकुल चलाने के लिए उन्होंने धन्यवाद दिया। डा. विनोद जी ने कहा कि संस्था चलाने के लिए बड़ी धनराशि की आवश्यकता होती है। इसके लिए भामाशाहों व सरकारी सहायता की भी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मैं अपनी अनन्त शुभकामनायें इस गुरुकुल व आर्ष पद्धति से चलने वाले गुरुकुलों के लिए करता हूं।

सम्मान एवं लोकार्पण

आज उत्सव में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा तैयार संस्कृत के व्याकरण ग्रन्थ 'उणादिकोष' के पांचवें भाग का विमोचन किया गया। आचार्य धनंजय जी ने कहा कि उणादि कोष पढ़ाने व पढ़ने की प्रेरणा ऋषि दयानन्द जी ने की है। जिन ब्रह्मचारियों ने उणादिकोष का संग्रह व सम्पादन कार्य किया, उन्हें गुरुकुल व इसके आचार्य धनंजय जी की ओर से शाल व एक घड़ी देकर सम्मानित किया गया। गुरुकुल के प्रतिभाशाली पूर्व ब्रह्मचारी श्री मोहित कुमार जी ने उत्तरप्रदेश की लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसकी जानकारी दी गई। स्वामी प्रणवानन्द जी ने उनका सम्मान किया। आचार्य धनंजय जी ने बताया कि मोहित जी एक निजी कम्पनी में सीओ हैं और वहाँ अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद का कार्य करते हैं।

गुरुकुल के ब्रह्मचारी श्री शिवदेव आर्य गुरुकुल की विख्यात मासिक पत्रिका 'आर्ष ज्योति' का सम्पादन करते हैं। हरिद्वार में आयोजित गुरुकुल सम्मेलन के वह मीडिया प्रभारी बनाये गये हैं। ऐसे अनेक महत्वपूर्ण कार्य वह करते हैं और गुरुकुल के बच्चों को पढ़ाते भी हैं। श्री शिवदेव आर्य को आज के कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। इस वर्ष गुरुकुल में आठ नये स्नातक तैयार हुए हैं। उन सबका भी सम्मान इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी और आर्य विद्वानों ने किया। सभी नवस्नातकों ने अपने आचार्य डा. धनंजय जी और आचार्य चन्द्र भूषण शास्त्री का भी सम्मान किया। आज 'आर्ष–ज्योति' मासिक पत्रिका के 'वेद–वेदांग विशेषांक' का लोकार्पण भी किया गया

जिसका सम्पादन श्री शिवदेव आर्य ने बहुत योग्तयापूर्वक किया है।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि ब्रह्मचारियों को दीक्षा देते समय आचार्य की मन की स्थिति भावुकता से पूर्ण होती है। आचार्य की इस मनोदशा का स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने सजीव चित्रण किया। उन्होंने कहा कि आचार्य अपने ब्रह्मचारियों का सर्वांगीण विकास करता है। स्वामी जी ने संस्कार विधि में दिये गये पितृ उपदेश की मुख्य बातों को भी प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि माता पिता की भावना होती है कि उनका पुत्र विद्याध्ययन समाप्त करके ज्ञान विज्ञान से पूर्ण होकर उनके सामने घर आये। यह कार्य गुरुकुल के आचार्य द्वारा ही किया जाता है। स्वामी जी ने कहा कि चारों वेद पढ़ने में ४८ वर्ष लगते हैं। यदि देश में यह व्यवस्था होती तो देश व समाज का भव्य रूप बनता। ऋषि दयानन्द का स्वप्न था कि देश ऐसा बनें कि यहां वेदों के चोटी के विद्वान बड़ी संख्या में हों। देश व विश्व वेद मार्ग पर चलें। ऋषि दयानन्द अविद्या का नाश होना देखना चाहते थे। स्वामी जी ने कहा कि ऋषि देश को चक्रवर्ती राज्य के रूप में देखना चाहते थे। आचार्य अपने शिष्यों को विद्या और संस्कार देता है। उन्होंने कहा कि आचार्य दीक्षा देते हुए कहता कि मेरे शिष्यों! तुम मेरे जीवन की अच्छाईयों को अपनाना और मेरे जीवन की जो बुराईयां हों, उन्हें छोड़ देना वा मत अपनाना। स्वामी जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी की शिक्षाओं से ही भारत विश्व गुरु और महान बन सकता है। अपनी वाणी को विराम देते हुए स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि आर्ष गुरुकुल हमारी धर्म व संस्कृति के दिव्य स्तम्भ हैं। उन्होंने गुरुकुल पौंधा के कार्यों की प्रशंसा कर अपने वक्तव्य को विराम दिया। रात्रिकालीन सत्र में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का सम्मेलन हुआ जिसमें उन्होंने अपने विविध प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

समापन दिवस ३ जून, सन् २०१८ का कार्यक्रम-

गुरुकुल के तीन दिवसीय उत्सव का ३ जून २०१८ को समापन हुआ। प्रातः गुरुकुल उत्सव में पधारे लोगों ने योगाभ्यास व व्यायाम किये। उसके बाद प्रातः ८.०० बजे से ऋग्वेद पारायण यज्ञ हुआ और पूर्णाहुति सम्पन्न की गई। यज्ञ के ब्रह्मा डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई ने यजमानों व यज्ञ मण्डप में उपस्थित सभी ऋषि भक्तों को आशीर्वचन कहे। यज्ञ के समापन के बाद मुख्यतः भजन एवं प्रवचनों की श्रृंखला आरम्भ हुई। प्रथम पं. सत्यपाल सरल जी के भजन हुए। उन्होंने 'भगवान शक्ति दो साधना दो' भजन सुनाया। उन्होंने एक अन्य भजन 'ऋषि दयानन्द दास्तां तुम्हारी ये जमां गाता सदा रहेगा। जब तक जमी रहेगी और आसमां रहेगा' भी सुनाया।

व्याख्यान वेदी पर आज आर्यसमाज के ६० वर्षीय प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. ओम् प्रकाश वर्म्मा जी भी उपस्थित थे। उन्होंने एक भजन की कुछ पंक्तियां प्रस्तुत कीं। श्री वर्म्मा जी ने कहा कि अब मैं बूढ़ा हो गया हूं। युवावस्था में मैं सुन्दर था। स्वामी भीष्म जी आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान थे। उन्होंने १०० वर्ष से अधिक आयु प्राप्त की। एक बार उन्होंने मुझे देखकर कहा था कि सुन्दर तो वह भी हैं परन्तु मेरी सुन्दरता उनसे अधिक है। वर्म्मा जी ने कहा इस गुरुकुल से मेरा सम्बन्ध इसकी स्थापना के समय से ही है। उन्होंने बताया कि पाणिनि कन्या गुरुकुल, वाराणसी और गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली का मैं आरम्भ से ही सहयोग करता कराता रहा हूं। मेरा गला ठीक है। आज इसकी परीक्षा के लिए मैं गीत प्रस्तुत कर रहा हूं। वर्म्मा जी ने कहा कि आर्यसमाज में आकर विद्वानों के विचार सुनकर और आर्यसमाज का साहित्य पढ़कर आत्मा को आनन्द आता है। उन्होंने यह भी कहा कि आर्यसमाज के सभी कार्यक्रमों में केवल आर्यसमाजी लोग ही आते हैं, दूसरे पौराणिक व अन्य लोग नहीं आते। वर्म्मा जी ने एक भजन की कुछ पंक्तियां गाकर सुनाई। बोल थे 'आर्यों तुमको तड़फना और तड़फाना भी है, आर्य बनना ही नहीं और आग बरसाना भी है।।' इसके बाद उन्होंने कुछ और शब्द कहे जो इस प्रकार थे 'महर्षि ने की खिजमत अपने प्यारे देश की।' पं. लेखराम जी को स्मरण कर उन्होंने कहा 'सारे शहीदों में ऊंचा है नाम पं. लेखराम का। तेरी लगन निराली थी जैसी कहीं किसी में देखी न थी। बिछड़ों को मिलाने के लिए तूने जीवन खपा दिया।। लड़का तेरा बीमार था शुद्धि को तू तैयार था। मरने का

पहुंचा तार था। पढ़कर के तार तूने यूं कहा, लड़का मरा तो क्या हुआ, दुनिया का ये तो है सिलसिला।।' इसके बाद वर्म्मा जी ने कहा कि 'सिर्फ सुनना ही नहीं है पैगाम तुमको वेद का, तुमको पैगाम वेद का दुनियां में फैलाना भी है।।' ६० वर्ष की आयु और शरीर की जीर्णता में वर्म्मा जी ने जिस जोश से अपनी बातें कहीं, वह उनकी ईश्वर, वेद और ऋषि भक्ति का प्रमाण है। पं. नरेश दत्त जी ने एक भजन 'ये आपके छोटे बच्चे मानों रेशम के लच्छे, इन्हें रखना जरा बचाकर ले चलना रस्ते अच्छे।' प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री, डा. रघुवीर वेदालंकार, डा. यज्ञवीर, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, पं. धर्मपाल शास्त्री, डा. अन्नपूर्णा जी और डा. रवीन्द्र आर्य ने सहित ठाकुर विक्रम सिंह जी एवं गुरुकुल के आचार्य डा. धनंजय जी ने अपने विचार रखे। हम यहां विद्वानों के विचारों को संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

वैदिक विद्वान पं. वेद प्रकाश श्रोत्रिय का व्याख्यान–आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने अपना व्याख्यान आरम्भ करते हुए कहा कि पौन्धा की धरती का कोई पुण्य रहा होगा तभी स्वामी प्रणवानन्द जी ने यहां पहुंच कर गुरुकुल का पौधा लगाया और उसे स्वयं व धनंजय के द्वारा सींच रहे हैं। उन्होंने कहा कि विद्या की प्राप्ति के लिए स्वामी दयानन्द ने मथुरा में गुरु विरजानन्द की कुटिया में प्रवेश किया था। दयानन्द जी की बातें सुनकर स्वामी विरजानन्द जी बोले थे कि मेरे पास तुम्हारे लिए रोटी का प्रबन्ध नहीं है। तुम पहले रोटी का प्रबन्ध कर लो। यदि हो जाये तो अध्ययन करने आ जाना। स्वामी दयानन्द सोचते हैं कि भोजन का प्रबन्ध कैसे हो? श्रोत्रिय जी ने मथुरा निवासी पं. अमरनाथ जोशी का उल्लेख किया। जोशी जी को इस बात का पता चला तो उन्होंने स्वामी दयानन्द को कहा कि तुम भोजन की चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारे भोजन का प्रबन्ध करुंगा। आर्य विद्वान श्री श्रोत्रिय जी ने कहा कि पं. अमरनाथ जोशी जी को जब कभी कहीं जाना होता था तो वह स्वामी दयानन्द जी को भोजन कराकर जाते थे। स्वामी दयानन्द जी जोशी जी के उपकार को मानते हैं। यदि जोशी जी स्वामी जी को न मिलते तो उन्हें स्वामी विरजानन्द जी से पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त न होता। श्रोत्रिय जी ने भाव विह्वल होकर तीव्र स्वर में कहा कि हे दयानन्द! तेरे जीवन में विद्या का जो तेज नजर आता है, उसमें स्वामी विरजानन्द जी द्वारा किया गया विद्यादान तो मुख्य है ही पर इसके साथ तुम्हारे उस तेज में पं. अमरनाथ जोशी के अन्न का तेज भी दिखाई देता है।

शीर्ष वैदिक विद्वान एवं प्रभावशाली वक्ता पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने कहा कि दान केवल विद्या का ही होता है और किसी का होता नहीं है। गुरुकुलों में भवन निर्माण व अन्य कार्यों के लिए दिये जैने वाले पैसे को इसलिए दान कहा जाता है वहां ब्रह्मचारी बैठकर वेद पढ़ता है। गो दान इस लिए दान है कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी विद्या अर्जित करने में गोदुग्ध व घृत आदि से शारीरिक बल व शक्ति प्राप्त करता है। श्रोत्रिय जी ने कहा कि यदि गुरुकुल का ब्रह्मचारी कहीं जाकर वेद–वेदांग पढ़ाता है तो मैं कहूंगा कि यह तेज आचार्य धनंजय और गुरुकुल में अध्ययन कराने वाले अन्य आचार्यों का है। श्रोत्रिय जी ने एक बार जमशेदपुर जाते हुए रेल में शकंराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ के साथ हुए अपने वार्तालाप को भी प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मैंने शंकराचार्य से पूछा था कि शास्त्र का क्या महत्व है? उन्होंने कहा था कि यह प्रदीप वा दीये के समान हैं। आचार्य जी ने कहा कि मैंने युक्तियों से शंकराचार्य जी की बात का प्रतिवाद कर प्रमाणों को प्रस्तुत कर कहा कि वेद शास्त्र प्रदीप के समान नहीं अपितु सूर्य के समान है। विद्वान श्रोत्रिय जी ने कहा कि सूर्य सारे ब्रह्माण्ड में चमकता है। वह स्वयं को भी प्रकाशित करता है और संसार को भी प्रकाशित करता है। वेद भी ज्ञान से परिपूर्ण समस्त संसार को अपने ज्ञान से प्रकाशित करता है।

ऋषि भक्त पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने विष पीया, स्वामी शंकराचार्य, मीरा, और सुकरात ने भी विषपान किया था। विष पीकर यह सब अमर हो गये। उन्होंने भावों में भरकर कहा कि शंकर ने तो एक बार ही विष पीया परन्तु मेरे ऋषि दयानंद ने तो १७ बार विष पिया था। क्या ऋषि दयानन्द अमर नहीं हुए? श्रोत्रिय जी ने गौरव से भर कर कहा कि स्वामी दयानन्द ने अमरता को दासी बनाकर रख लिया था। वह

जब तक जीवित रहे अमर बन कर वसुन्धरा पर विचरण करते रहे। आचार्य वेदप्रकाश जी ने कहा कि शंकर ने एक बार विष पीया था, वह शंकर नाम धारी थे परन्तु स्वामी दयानन्द ने १७ बार विष पीकर स्वयं को मूल शंकर सिद्ध किया। १७ बार विष पीने वाले मूलशंकर स्वामी दयानन्द विश्व में अपना उदाहरण स्वयं हैं। दूसरा उदाहरण कहीं मिलता नहीं है। श्रोत्रिय जी ने कहा कि मूल शंकर ने मूल वेद को पकड़कर उसका भाष्य किया और वेदों पर पड़े सभी आवरणों को हटाकर वेदों को सच्चे ज्ञान व विज्ञान का ग्रन्थ सिद्ध किया। श्रोत्रिय जी ने गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारियों से आशा की कि वह दयानन्द जी के समान बनने का प्रयास करेंगे।

आर्य विद्वान श्रोत्रिय जी ने कहा कि कुम्हार दीया बनाता है। वह पशुओं व हजारों मनुष्यों द्वारा रोंदी गई मिट्टी को खोदकर अपने घर लाता है। उसे कूटता पीसता है और उसे बारीक कणों में परिवर्तित करता है। इस मिट्टी को जल से भिगोकर उसे रेशेदार बनाता है और उसके बाद उस मिट्टी से दीया बनाता है। अलंकारिक भाषा का प्रयोग करते हुए आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि दीये ने ऊपर की दिशा में बढ़ने का व्रत लिया हुआ है। उन्होंने धनवानों की चर्चा की और कहा कि वह दिखाते हैं कि हम धनवान है, हममें धन की शक्ति है। उन्होंने धनवानों को दीये से प्रेरणा ग्रहण करने को कहा। धनवान की दीये से तुलना करते हुए उन्होंने कहा कि दीया, तेल व बाती मिलकर अन्धकार दूर करने के लिए तत्पर रहते हैं। कहीं अन्धेरा हो तो कोई पथिक आकर उस दीये को जलाकर अन्धकार दूर कर सकता है। श्रोत्रिय जी ने कहा कि दीये के समान एक जीवन हमारे देश में भी आया था, वह देश व मानव जाति के उद्धार के लिये जला था और उसने प्रकाश देकर मनुष्यों को सन्मार्ग दिखाया था। श्रोत्रिय जी ने प्रकाश एवं अन्धेरा का एक दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए कहा कि अन्धेरे ने दीये से कुछ स्थान उसे देने की प्रार्थना की। दीये ने कहा कि मैंने अपने भीतर जो सामर्थ्य प्राप्त की है वह अन्धकार मिटाने और प्रकाश करने के लिए है। तू प्रकाश में तो रह नहीं सकता इसलिये यदि रहना चाहता है तो आकर मेरे नीचे दास बन कर रह सकता है। इस उदाहरण से यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ऋषि दयानन्द ने वेद प्रकाश करके अविद्यायुक्त मतों को दीये के नीचे का स्थान दिया है। वेदों के प्रकाश के सम्मुख कोई अविद्यायुक्त मत स्थिर नहीं रह सकता। सब अपनी अविद्या के कारण वेदों को स्वीकार न करके अन्धकार की तरह उससे दूर भागते हैं। आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने कहा कि जब कोई जिज्ञासु वेदज्ञान की सच्ची कामना करे तो गुरुकुल के ब्रह्मचारी को उसे विद्वान बनाकर उसे वेदज्ञान से प्रकाशित करना चाहिये। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द जी के जो कोई व्यक्ति सम्पर्क में आया वह उनसे ज्ञान प्राप्त कर प्रकाशित होता रहा। श्रोत्रिय जी ने दयानन्द जी से प्रकाश प्राप्त करने वालों स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम आदि महापुरुषों के नाम लिये। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए आचार्य श्रोत्रिय जी ने वेदों के प्रचार–प्रसार व धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए गुरुकुलों की सहायता करने की प्रेरणा व अपील की।

आर्य विद्वान डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री का व्याख्यान–दिल्ली से पधारे संस्कृत भाषा के विद्वान डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री ने अपने सम्बोघन में कहा कि बौद्ध और जैन मतों की बाढ़ ने वैदिक धर्म को मिटाने का प्रयास किया था। स्वामी शंकराचार्य के शिष्य कुमारिल भट्ट थे। उन्होंने बताया कि एक युवती रो रही थी। वह कह रही थी कि वैदिक धर्म का पराभव हो रहा है। क्या वेद धर्म विलुप्त हो जायेगा? शास्त्री जी ने कहा कि कुमारिल भट्ट ने उस देवी के वचनों को सुना और उससे कहा कि तुम चिन्ता न करो। जब तक स्वामी शंकराचार्य का शिष्य इस धरती पर है तुम्हें वेद की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। मैं वेद धर्म की रक्षा करूंगा। ऋषि दयानन्द ने इसी कारण से स्वामी शंकराचार्य की प्रशंसा की है। डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने कहा कि स्वामी शंकराचार्य जी ने तीन ग्रन्थों वेदान्त, गीता और उपनिषदों पर शंकर भाष्य की रचना की है जिन्हें प्रस्थान–त्रयी कहते हैं। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी के भी सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और संस्कारविधि तीन प्रमुख ग्रन्थ

हैं। विद्वान वक्ता ने कहा कि शंकराचार्य जी इन तीन ग्रन्थों तक ही सीमित रहे। डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने वेदान्त के प्रथम, द्वितीय और तीसरे सूत्र की चर्चा की। उन्होंने इन तीन सूत्रों की व्याख्या भी की। उन्होंने शंकर भाष्य को उद्धृत कर कहा कि उनके अनुसार वेद वा शास्त्र की रचना का निमित्त कारण ब्रह्म है। विद्वान वक्ता ने कहा कि ऋग्वेद जैसे शास्त्र की रचना करने की सामर्थ्य किसी मनुष्य व विद्वान में नहीं है। यह केवल ब्रह्म वा ईश्वर की रचना है। शास्त्री जी ने कहा कि स्वामी शंकर वेद तक नहीं पहुंचे। ऋषि दयानन्द जी वेद की तह में गये थे। शास्त्री जी ने कहा कि जब तक हम दयानन्द जी के तीन ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करेंगे हम ऋषि दयानन्द जी व वेदों को समझ नहीं सकते। शास्त्री जी ने शंकर एवं दयानन्द जी के कुछ अन्य पक्षों की भी चर्चा की। डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री ने कहा कि विदेशी विद्वान प्रो. मैक्समूल ने स्वामी दयानन्द रचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का अध्ययन कर लिखा है कि वह वैदिक साहित्य को दो भागों में बांटते हैं। एक भाग में ऋग्वेद आदि समस्त वैदिक ग्रन्थ हैं और दूसरे भाग में ऋषि दयानन्द की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को उन्होंने रखा है। ऋषि दयानन्द के महत्व की चर्चा करते हुए विद्वान डा. धर्मेन्द्र शास्त्री ने कहा कि महाभारत काल के लगभग पांच हजार वर्षों बाद ऋषि दयानन्द ने वेद के मन्त्रों का सत्यार्थ व उनकी सुललित व्याख्या की। योगी अरविन्द की चर्चा कर उन्होंने बताया कि उनके अनुसार वेदों की अन्तिम व्याख्या कुछ भी क्यों न हो परन्तु ऋषि दयानन्द ने वेदों के जो अर्थ किये हैं उनसे यह निश्चित होता है कि वेद मन्त्रों के सत्यार्थ की कुंजी दयानन्द जी को प्राप्त हुई थी। शास्त्री जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द के अनुसार पृथिवी तेज गति से आकाश में सूर्य के चारों ओर घूम रही है। हम पृथिवी पर होते हैं परन्तु हमें उसकी तेज गति का किंचित भी अनुभव नहीं होता जबकि हम पृथिवी की गति से सूर्य की परिक्रमा कर रहे होते हैं। शास्त्री जी ने केन्द्रीय मंत्री श्री सत्यपाल सिंह का उल्लेख कर कहा कि आर्य विद्वान श्री सत्यपाल सिंह जी ने डारविन के सृष्टि व मनुष्योत्पत्ति विषयक मिथ्या सिद्धान्त की आलोचना की है। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में वेदमन्त्रों के जो अर्थ किये हैं उनसे डारविन के सिद्धान्त का खण्डन होता है। उन्होंने कहा कि सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य बन्दर नहीं अपितु ईश्वर के द्वारा अमैथुनी सृष्टि से मनुष्य के समान आकृति व आचार विचार वाले मनुष्य ही उत्पन्न हुए थे। उन्होंने कहा कि अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मा आदि ऋषि प्रमुख है। आर्य विद्वान डा. धर्मेन्द्र शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्य में रुद्र पद के २० अर्थ किये हैं। उन्होंने रुद्र के भिन्न–भिन्न अर्थों पर प्रकाश डाला। विद्वान आचार्य ने कहा कि पृथिवी माता और सूर्य हमारे पिता का काम करता है। शास्त्री जी ने कहा कि वैदिक धर्म व वेद की रक्षा के लिए हमें सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और संस्कारविधि को पढ़ना होगा। उन्होंने ऋषि भक्त पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के ज्ञान व उनके कार्यों की प्रशंसा की। शास्त्री जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने अग्नि शब्द के लगभग ६० अर्थ किये हैं। हम सबको ऋषि के समस्त ग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिये। ऐसा करने से आपको ऋषि दयानन्द जी का महत्व समझ में आयेगा।

वैदिक विद्वान डा. रघुवीर वेदालंकार जी का सम्बोधन– आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि मनुष्य संसार में काम करता हुआ प्रकाश का अनुकरण करे अन्यथा वह अहंकार में फंस जायेगा। हमें अपने कर्तव्यों का बोध कैसे हो? डा. रघुवीर जी ने कहा कि ईश्वर ने सृष्टि बनाने के साथ अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों को ज्ञान का भानु वेद दिया। इससे हमें अपने कर्तव्यों का बोध मिलता है। ईश्वर ने प्रकाश देने वाला सूर्य बनाया। उसी परमात्मा ने चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान उनके यथार्थ अर्थों सहित दिया था। उन्होंने कहा कि महाभारत के बाद वेदों पर भी सूर्य ग्रहण की भांति ग्रहण लगे। वेद पर ग्रहण लगने पर वेद ज्ञान लुप्त हो गया। तब वेदों का प्रकाश बन्द हो गया था। कुछ भी कह लिया जाये परन्तु तब वेदों के नाम पर मूर्तिपूजा, नाना प्रकार के भ्रम, सामाजिक असमानता,

यज्ञों में हिंसा, फलित ज्योतिष, अवतारवाद आदि फैलाये गये। वेदों का प्रकाश न आने के कारण ऐसा हुआ था। डा. रघुवीर वेदालंकार जी ने स्वामी शंकराचार्य का उल्लेख किया और कहा कि उन्होंने सारे भारत को एक सूत्र में बांधने का प्रयत्न किया। स्वामी शंकराचार्य ने वेदों का प्रकाश व प्रचार नहीं किया, यह बहुत बड़ी गलती उस समय हुई। आचार्य डा. रघुवीर वेदालंकार जी ने कहा कि महर्षि यास्क हुए। उन्होंने निरुक्त आदि के द्वारा वेदभाष्य की शुद्ध पद्धति को बताया परन्तु तब भी सायण आदि भाष्यकार अपने ही हिसाब से वेदों के दूषित अर्थ करते रहे। आचार्य जी ने वेदों के सत्य स्वरूप की चर्चा की। उन्होंने निष्कर्ष में कहा कि वेद ज्ञान व विज्ञान सहित सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक है। आचार्य रघुवीर वेदालंकार जी ने स्वामी दयानन्द जी के काशी में स्वामी विशुद्धानन्द एवं उनके सहयोगी पौराणिक विद्वानों से मूर्तिपूजा की वेदमूलकता पर शास्त्रार्थ की चर्चा की। उन्होंने कहा कि स्वामी विशुद्धानन्द जी के एक शिष्य पं. मधुसूदन थे। स्वामी विशुद्धानन्द जी ने दयानन्द जी की विद्या व वेदभक्ति से प्रभावित होकर उन्हें कहा था कि अब हमें भी वेदों को पढ़ना पड़ेगा। आचार्य जी ने कहा कि जो संस्कृत पढ़ा लिखा है, धार्मिक है और वेदों के सत्य अर्थों को नहीं जानता वह ठूंठ के समान है। आचार्य जी ने कहा कि पं. बाल गंगाधर तिलक की बहुत सी मान्यतायें वेदविरुद्ध थी। जब उनसे उनकी उन मान्यताओं के वेदसम्मत प्रमाण बताने को कहा गया तो उन्होंने कहा कहा कि उन्होंने वेदों को नहीं पढ़ा। उन्होंने तो अंग्रेजों के वेदों के अनुवादों को देखा है। उसी के आधार पर उन्होंने अपनी मान्यतायें स्थिर की हैं। उन्हें नहीं पता कि उनकी मान्यतायें वेदों की सत्य मान्यताओं के विपरीत हैं।

डा. रघुवीर वेदालंकार जी ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द जी की बहुत चर्चा की जाती है और उन्हें धर्म आदि के क्षेत्र में बहुत महत्व दिया जाता है। उन्होंने बताया कि स्वामी विवेकानन्द जी उपनिषदों को ही वेद कहते थे। आचार्य जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द से पूर्व धार्मिक विद्वान वेदों के विषय में भ्रान्ति का शिकार थे। उन्हें ठीक ठीक पता नहीं था कि वेद किन ग्रन्थों की संज्ञा है। स्वामी दयानन्द ने अपने अतुल वेद व शास्त्र ज्ञान के आधार पर ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को ही मूल चार वेद घोषित किया। आचार्य जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द का व्यक्तित्व क्रान्तिकारी था। स्वामी दयानन्द ने ही बताया कि वेद ईश्वरीय वाणी तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। स्वामी दयानन्द ने सायण के वेद भाष्य को अनर्थमूलक बताया है। स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि जब उनका किया जा रहा वेदभाष्य पूर्ण हो जायेगा तो संसार में सूर्य के समान सत्य ज्ञान का प्रकाश हो जायेगा कि जिसको झेपने व मेटने का साहस व शक्ति किसी भी मनुष्य में नहीं होगी।

डा. रघुवीर वेदालंकार जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने अज्ञान को मिटाकर वेदों के सत्यस्वरूप को हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है। स्वामी दयानन्द जी ने वेद की मुख्य कुंजी शिक्षा, पाणिनी अष्टाध्यायी व महाभाष्य, निरुक्त, छन्द व ज्योतिष आदि को पकड़ा। उन्होंने अपना वेदभाष्य निरुक्त के आधार पर किया। आचार्य रघुवीर वेदालंकार जी ने वेद विरोधी अज्ञानी आचार्यों की वेद विषयक बातों का भी उल्लेख कर उन पर प्रकाश डाला। आचार्य जी ने कहा कि वेद कभी नष्ट न होने वाला ज्ञान है। उन्होंने कहा कि परमात्मा नित्य है। इसी कारण परमात्मा का ज्ञान भी नित्य व अविनाशी है। वेदों के ऊपर जो काले बादल मंडराये थे, वह ऋषि दयानन्द के वेदों के सत्य व यथार्थ ज्ञान के ऊपर भी मंडरा रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द राष्ट्र निर्माता हैं परन्तु साहित्य एवं इतिहास में उनका नाम नहीं है। विद्वान वक्ता ने कहा कि यह देश के विद्वानों एवं नेताओं की उनके विरुद्ध एक साजिश है। आचार्य जी ने आसाराम बापू के नाम पर प्रचलित पाखण्डों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि उनके अनुयायी उनके चित्र को देख कर भोजन करते हैं। आचार्य जी को व्याख्यान के लिए १० मिनट का दिया गया समय पूरा हो जाने पर उन्होंने समय के भीतर ही अपने वक्तव्य को विराम दिया।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी का सम्बोधन- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमें यज्ञाग्नि को घर–घर पहुंचाना है। ज्ञान फैलाने के

लिए हमें पुरुषार्थ करना है। स्वामी जी ने विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती जी द्वारा सत्यार्थप्रकाश पढ़कर ऋषिभक्त और आर्यसमाज का अनुयायी बनने की कथा को विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि एक युवा संन्यासी कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे मलेरिया ज्वर हो गया। यह ज्वर हर तीसरे दिन चढ़ता है। एक गांव में यह युवा किसी कृषक के घर में प्रविष्ट हुआ और उनसे निवेदन किया वह उसकी रक्षा करें। उन्होंने अपने ज्वर के विषय में उन्हें बताया। किसान ने उस युवा साध ु की सहायता की। जब बुखार उतरा तो वह साधु जाने लगे। किसान ने उन्हें बताया कि यह ज्वर तीन दिन बाद फिर आयेगा इसलिये आप यहां निःसंकोच रहे और तीन दिन बाद ज्वर न आये तो चले जाना। उस किसान ने उनकी ओषधियों आदि से प्रशंसनीय सेवा की। तीसरे दिन ज्वर नहीं आया तो वह युवक जाने को तैयार हो गये। इस किसान ने जो कि आर्यसमाजी थे, सोचा कि यह युवा संन्यासी वेदान्ती है और प्रति–उत्पन्न–मति वाला है। उसने विचार किया कि इन्हें ऋषि का सन्देश देना चाहिये। जब वह स्वामी जी जाने लगे तो इस किसान युवक ने उन्हें एक रेशमी वस्त्र में लपेट कर एक पुस्तक भेंट की और उनसे निवेदन किया कि आप समय निकाल कर इस पुस्तक को अवश्य पढे।

यह संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी थे। उन्होंने उस युवक को वचन दिया कि वह इस पुस्तक को अवश्य पढ़ेंगे। यह पुस्तक सत्यार्थप्रकाश थी। एक स्थान पर जब स्वामी जी किसी वृक्ष के नीचे विश्राम करने के लिए रूके तो उन्हें उस किसान युवक की सेवा का स्मरण हो आया और सोचा कि उसने मेरे प्राण बचायें हैं। उसने मुझे कोई पुस्तक दी है, देखूं कौन सी पुस्तक है। उन्होंने खोला तो वह सत्यार्थप्रकाश थी। पहले तो वह अप्रसन्न हुए परन्तु सेवक की सेवा को सोचकर उन्होंने विचार किया कि मैंने पढ़ने का वचन दिया। पढ़ने में तो कोई दोष नहीं है। मैं अपने विचार नहीं बदलूंगा। स्वामी सर्वदानन्द जी ने इस घटना को स्मरण कर लिखा है कि सत्यार्थप्रकाश का पहला समुल्लास पढ़कर ही उनके विचारों में परिवर्तन आ गया। सौ से अधिक नामों की प्रथम समुल्लास में ऋषि दयानन्द कृत व्याख्या व अन्य बातों को पढ़कर उन पर एक चमत्कार सा हुआ। वह इस घटना से सत्य वेदमार्ग पर चलने के लिए संकल्पित हुए। काली नदी, अलीगढ़ में स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित व संचालित गुरुकुल अब भी चल रहा है। इसी गुरुकुल में ऋषिभक्त एवं व्याकरण के उच्च कोटि के विद्वान पद–वाक्य–प्रमाणज्ञ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी ने भी पढ़ाया था और पं. युधिष्ठिर मीमांसक और आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता कैप्टेन देवरत्न आर्य जी के पूज्य पिता आचार्य भद्रसेन जी आदि अनेक ब्रह्मचारी यहां पढ़े थे। स्वामी ध र्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने बताया कि स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती, पं. शिवकुमार शास्त्री, पं. विश्वबन्धु शास्त्री आदि प्रवर वैदिक विद्वान इसी गुरुकुल की देन थे। स्वामी जी ने कहा कि एक आर्य युवक की एक सन्यासी की सेवा और उन्हें सत्यार्थ प्रकाश भेंट करने से आर्यसमाज का कितना हित हुआ है। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती जी के कालीनदी, अलीगढ़ गुरुकुल से जितने भी स्नातक तैयार हुए जिन्होंने आर्यसमाज की प्रशंसनीय सेवा की है, उसका श्रेय उस किसान युवक को ही है। स्वामी जी ने श्रद्धालु धर्मप्रेमी श्रोताओं को कहा कि आप गुरुकुल की जितनी सहायता करेंगे, उससे आर्यसमाज का जो काम होगा, उसका कुछ श्रेय आपका भी होगा। यह कहकर स्वामी जी ने अपनी वाणी को विराम दिया।

द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की आचार्या डा. अन्नपूर्णा का सम्बोधन - द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या डा. अन्नापूर्णा जी ने कहा कि इस गुरुकुल के उत्सव में ज्ञान की गंगा बह रही है। आप सबको इस ज्ञान की गंगा में डुबकी लगानी चाहिये। उन्होंने कहा कि यदि आप इस ज्ञान की गंगा में डुबकी लगायेंगे तो भविष्य में होने वाले पापों से आप बच जायेंगे। परमात्मा ने वेद के द्वारा हमें सद्ज्ञान प्रदान किया है। वेद ही समस्त ज्ञान व विज्ञान का भण्डार है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना व उसका प्रचार करना हम सबका परम धर्म है। आत्मा, परमात्मा, प्रकृति का समस्त ज्ञान वेद में समाया हुआ है। वेद सभी मनुष्यों को सच्चा मनुष्य बनने की प्रेरणा करता है। विदुषी आचार्या

जी ने कहा कि यदि हम वेदज्ञान युक्त नहीं बने तो हम मनुष्य वा आर्य नहीं हैं। आचार्या जी ने कहा कि वेद में विधि और निषेध दोनो प्रकार के कर्मों का विधान है। वेद अपौरुषेय ज्ञान है जिसका देने वाला परमात्मा है। वेदों में विधेय कर्म करने से हमारा जीवन बनेगा। वेद यज्ञ करने की भी प्रेरणा करते हैं। वेद सामान्य मनुष्य को श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव वाला मनुष्य बनाता है। वही मनुष्य योगी बनता है। वेद के गुणों से युक्त मनुष्य अन्य सभी मनुष्यों की रक्षा करता है। आचार्या जी ने कहा कि वेदों का प्रचार न होने से संसार अज्ञान में फंसा हुआ है। स्वामी दयानन्द जी ने वेद को घर–घर में पहुंचाने का प्रयत्न किया। अपने व्याख्यान को विराम देते हुए आचार्या डा. अन्नपूर्णा जी ने लोगों को अपने बच्चों को गुरुकुलों में पढ़ाने की प्रेरणा की।

प्रसिद्ध दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह का सम्बोधन– आज के समापन सत्र की अध्यक्षता ऋषि भक्त एवं प्रसिद्ध दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह जी ने की। उन्होंने नीरव मोदी व उनके हीरे के व्यापार विषयक अपने संस्मरण सुनाये। अध्यक्ष जी ने कहा कि यदि असली हीरे देखने हों तो वह आपको आर्यसमाज के गुरुकुलों में मिलेंगे। उन्होंने स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती और स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती को त्यागी व तपस्वी संन्यासी बताया। उन्होंने कहा कि आजादी से पूर्व गुरुकुल कांगड़ी में अंग्रेज सरकार द्वारा बम की अफवाह की पुष्टि करने के लिए तलाशी ली गई थी। वहां उन्हें बम आदि कुछ प्राप्त नहीं हुआ। जब जांच करने वाले लोगों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी से बम के बारे में पूछा तो उन्होंने ब्रह्मचारियों को उनके सम्मुख खड़ा कर कहा कि ये ब्रह्मचारी ही हमारे असली बम है। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कहा कि हमें ईश्वर, वेद, आर्यसमाज और दयानन्द जी की वैदिक विचारधारा का प्रचार करना है। उन्होंने बताया कि कुंवर सुखलाल आर्यमुसाफिर ऐसे आर्य भजनोपदेशक थे कि जब वह लाहौर के आर्यसमाज अनारकली के उत्सव में जाते थे तो उन्हें सुनने के लिए लाहौर के सभी व्यापारी अपने दुकाने बन्द करके आर्यसमाज में जाते थे और लाहौर की सड़कों पर सन्नाटा छा जाता था। अध्यक्ष महोदय ने कहा भारत स्वतन्त्र भारत नहीं अपितु उद्दण्ड भारत है। आर्य विद्वान श्री विक्रम सिंह जी ने गुरुकुलों का सहयोग करने के साथ गोपालन करने, गायत्री महायज्ञ करने और साथ ही गान विद्या का प्रचार करने की प्रेरणा की। उन्होंने संस्कृत पढ़ने व उसका प्रचार करने की भी प्रेरणा की। उन्होंने अपने व्याख्यान की समाप्ति पर कहा कि यदि वसुन्धरा का भोग करना चाहते हो तो वीर बनो।

युवा आर्य विद्वान डा. रवीन्द्र आर्य का सम्बोधन– युवा आर्य विद्वान डा. रवीन्द्र आर्य ने कहा कि वेद विश्व के प्रथम ग्रन्थ है। संसार में ज्ञान व विज्ञान का स्रोत वेद ही है। वेद एवं महाभारत में ज्ञान विज्ञान के सिद्धान्त वर्णित हैं। श्री रवीन्द्र आर्य जी ने अन्य मतों के धर्मग्रन्थों की चर्चा की। उन मतों के अनुयायी अपने उस मत के धर्म ग्रन्थ व उनकी शिक्षाओं को मानते हैं। वह धर्म ग्रन्थ व उसके आचार्य अपने अपने मतों के अनुयायियों के ही हित की बातें करते हैं। इसके विपरीत वेद ऐसा ग्रन्थ है जो संसार के सभी मनुष्यों के हित व कल्याण की बातें करता है। मनुष्य जीवन को सुन्दर व सुखी बनाने के लिए वेद मार्ग पर चलना आवश्यक है। सभी मत मत–मतान्तर अपने मत व धर्म को मानने की प्रेरणा करते हैं। वेद मत–मतान्तरों पर चलने की प्रेरणा न कर मनुष्य को मनुष्य बनने की प्रेरणा व शिक्षा देते हैं। डा. रवीन्द्र आर्य ने कहा कि अधिकांश राज्यों में प्रायः अलग अलग भाषाओं को बोलकर व्यवहार करने का प्रचलन है। जो व्यक्ति जिस भाषा को बोलता है उससे उसके राज्य की पहचान हो जाती है। संस्कृत भाषा की यह विशेषता है कि इसे बोलने वाले व्यक्ति को लगता है कि वह किसी राज्य विशेष का नहीं अपितु पूरे भारत का निवासी व नागरिक है। संस्कृत ऐसी भाषा है जो पूरे देश को जोड़ती है। हम सबको संस्कृत पढ़नी चाहिये। हमें वेद भी पढ़ने चाहियें। उन्होंने कहा कि देश में एक कुचक्र चल रहा है कि वेद, संस्कृत व हिन्दी भाषा को दबाया जाये व इन्हें बिगाड़ा जाये। विद्वान आचार्य ने कहा कि वेद और वैदिक ग्रन्थ केवल आर्यसमाज के पास हैं। ऋषि दयानन्द का भाष्य सर्वश्रेष्ठ होने पर भी सर्वत्र सायण एवं महीधर के असत्य अर्थों वाले भाष्य पढ़ाये जाते हैं। सायण और महीधर के भाष्यों

को पढ़ने वाले लोगों को यह पता नहीं चलता कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। ऋषि दयानन्द का भाष्य पढ़कर वेदों के ईश्वरीय ज्ञान होने की पुष्टि होती है और इससे वेदों का गौरव बढ़ता है।

डा. रवीन्द्र कुमार आर्य ने कहा कि ऋषि दयानन्द ही वेदों के ऐसे ऋषि हुए हैं जिन्होंने वेदों में समस्त ज्ञान व विज्ञान होने की चर्चा की है। वेद सार्वकालिक हैं और प्राणीमात्र के हित की शिक्षा व ज्ञान देने वाले ग्रन्थ हैं। वेदों को पढ़ना व पढ़ाना हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिये। उन्होंने बताया कि जर्मनी और इंग्लैण्ड में संस्कृत पढ़ायी जाती है। संस्कृत सब भाषाओं की जननी एवं सबसे उत्कृष्ट भाषा है। हमें संस्कृत के प्रचार व प्रसार के लिए आन्दोलन व संघर्ष करना चाहिये। वेदाध्ययन पूरा होने पर ही अध्ययन की समाप्ति होती है। जो सभी वेदों को समझ सकता है वही विद्या स्नातक होता है। डा. रवीन्द्र कुमार आर्य ने तीन प्रकार के स्नातकों की चर्चा की और कहा कि विद्या व ज्ञान में नैपुन्यता प्राप्त कर लेने वाले को विद्या स्नातक कहते हैं। उन्होंने कहा कि परशुराम जी वेद विद्या व शस्त्र विद्या आदि सभी विद्याओं में निपुण थे। उन्होंने बताया कि गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारी शास्त्र और शस्त्र दोनों विद्याओं में निपुण बन रहे हैं। आचार्य रवीन्द्र कुमार आर्य ने वेद और संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा करते हुए अपने विचारों को विराम दिया।

गुरुकुल पौंधा के प्राचार्य डा. धनंजय आर्य जी का सम्बोधन-आचार्य डा. धनंजय जी ने इसके बाद एक प्रेरक एवं सारगर्भित व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि ईसाई हिन्दुओं के घरों में जा जाकर अपने छोटे–छोटे ग्रन्थों को निःशुल्क बांटते हैं। वह पुस्तक में लिखी गई बातों का प्रमाण नहीं देते और जिससे अन्धविश्वासों, अज्ञान व मिथ्या आस्थाओं का प्रचार होता है। उन्होंने बताया कि बाद में वह प्रचारक उन लोगों से मिलते हैं जिन्हें उन्होंने पुस्तकें दी थी और उनसे पूछते हैं कि आपको पुस्तक कैसी लगी? आचार्य जी ने बताया कि उन पुस्तकों के पढ़ने वालों के पास विवेक बुद्धि अर्थात् सत्यासत्य की परीक्षा करने की क्षमता न होने के कारण उन्हें सत्य व असत्य का ज्ञान नहीं होता। विवेक बुद्धि वेद व वैदिक ग्रन्थों को पढ़ने से ही प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के लोगों को अपने आस–पास के लोगों के घरों में जाकर उन्हें सन्ध्या की पुस्तकें देनी चाहियें और सन्ध्या करना सीखाने के साथ उन्हें सन्ध्या क्यों की जाती है व उससे कौन कौन से लाभ होते हैं, यह भी बताना चाहिये। ऐसा करके वह अज्ञानी व विवेक शून्य मनुष्यों के मन से अविद्या व अन्धविश्वासों को दूर करें और उनका भावनात्मक व धार्मिक शोषण न होने दें। उन्होंने सबको गुरुकुल से यह संकल्प लेकर जाने को कहा कि वह अपने घरों में जाकर आर्यसमाज के सिद्धान्तों और सन्ध्या आदि का प्रचार करेंगे। उन्होंने कहा कि जब आप बस में जायें तो अपने पास बैठे हुए व्यक्तियों से प्रश्नोत्तर करें जिससे वह वेद की महत्ता को जान सकें। उन्होंने लोगों को गायत्री मन्त्र के अर्थ सहित इसकी सभी विशेषतायें बताने की भी सलाह दी। आचार्य धनंजय जी ने कहा कि आप स्वयं आर्यसमाज से जुड़े रहे, दूसरों को भी जोड़े और सबको वेद की अच्छी अच्छी लाभप्रद बातें बताया करें।

आर्य विद्वान ऋषि-भक्त पं. धर्मपाल शास्त्री का सम्बोधन-काशीपुर निवासी आर्य विद्वान पं. धर्मपाल शास्त्री ने अपने सम्बोधन में कहा कि यदि स्वामी दयानन्द का नाम लिये बिना वेदों की चर्चा करें तो चर्चा अधूरी रहती है। ऋषि दयानन्द अनेक संकटों में भी विचलित नहीं हुए। वह कैसे सभी भीषण संकटों को सहन कर पायें इसका अनुमान भी हम नहीं कर सकते। शास्त्री जी ने स्वामी दयानन्द के कलकत्ता भ्रमण और वहां एक अधिवक्ता श्री अश्विनी कुमार दत्त से भेंटचर्चा की। वकील अश्विनी कुमार दत्त ने स्वामी दयानन्द से उनके जीवन पर व्यक्तिगत प्रश्न किया कि क्या आपको ब्रह्मचर्य विरोधी बुरे विचारों ने कभी परेशान तो नहीं किया? प्रश्न सुन कर ऋषि दयानन्द कुछ देर मौन रहे। उन्होंने अपने पूरे जीवन का निरीक्षण किया। उन्होंने दत्त महोदय को उत्तर दिया कि उनके मन में आज तक कभी बुरे विचार नहीं आये। दत्त महोदय ने पूछा कि यह कैसे सम्भव है? ऋषि दयानन्द ने कहा कि बुरे विचार मुझसे कुछ दूरी तक आये होंगे परन्तु मेरे

मन के द्वार को बन्द देखकर चले गये होंगे। उन्होंने बताया कि ऋषि दयानन्द सच्चे योगी थे। वह प्रातः ३.०० बजे उठकर रात्रि दस बचे तक व्यस्त रहते थे। जब कभी उन्हें अवकाश मिलता था तो वह ईश्वर में अपने मन को युक्त कर देते थे। अतः बुरे विचार नहीं आ पाते थे। यह उत्तर सुनकर दत्त महोदय ने ऋषि दयानन्द की प्रशंसा करते हुए पूर्ण सन्तोष व्यक्त किया था। अपने विचारों को विराम देते हुए आचार्य धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि हमें गुरुकुल की सहायता करनी चाहिये जिससे वैदिक विद्वान तैयार होकर पूरे देश व विश्व में वेदों का प्रचार हो सके।

गुरुकुल पौंधा के आचार्य डा. यज्ञवीर का संक्षिप्त सम्बोधन- गुरुकुल पौंधा के आचार्य डा. यज्ञवीर जी ने अपने संक्षिप्त विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि गुरुकुल का काम वेद का पढ़ना और पढ़ाना है। हम गुरुकुलों में वेदों की रक्षा के लिए वेद और वेद का व्याकरण पढ़ते व पढ़ाते हैं। उन्होंने कहा कि समय गतिमान है। वह रुकता नहीं है। आचार्य जी ने कहा कि जिस मनुष्य को जितना वेद ज्ञान मिल सके उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। उन्होंने कहा कि सत्यार्थप्रकाश पढ़कर भी वेदों के अनेक रहस्यों को जाना जा सकता है। आचार्य जी ने स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी पर अपनी एक कविता का भी पाठ किया जिसका तात्पर्य था कि हे प्रणवानन्द! आज गुरुकुल में आपका अभिनन्दन एवं वन्दन है।

सत्संग की समाप्ति के बाद गुरुकुल के उत्सव में पधारे सभी गुरुकुल प्रेमियों वा अतिथियों ने ऋषि लंगर लिया। सत्संग की समाप्ति के साथ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के व्यायाम, जुडो–कराटे आदि नाना प्रकार के असम्भव वा कठिन व्यायामों का प्रदर्शन हुआ। गुरुकुल में उपस्थित बृहद जनसमूह ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के प्रदर्शन को देखा व करतल ध्वनि आदि के द्वारा उनका उत्साहवर्धन किया। अपनी प्रस्तुतियों को देने के लिए ब्रह्मचारी विगत कई महीनों से अभ्यास कर रहे थे। ब्रह्मचारियों का उत्साहवर्धन करने के लिए अनेक श्रोताओं ने गुरुकुल को छोटी व बड़ी धनराशियां प्रदान कर सहयोग किया। ब्रह्मचारियों की प्रस्तुतियां ऐसी थी जिसके दर्शन सरकारी अनुदान से चलने वाले किसी स्कूल व कालेज में नहीं होते। इसका कारण यह है कि यह प्रस्तुतियां अति कठिन व साहसिक हैं जिन्हें अध्ययन व शारीरिक उन्नति को महत्व देने वाले गुरुकुल के विद्यार्थी ही कर सकते हैं। इस आयोजन के समाप्त होने पर सभी अतिथि महानुभाव अपने घरों को लौटना आरम्भ हो गये और कुछ ही घंटों बाद गुरुकुल में बहुत कम लोग रह गये जिनमें से कुछ को रात्रि की रेल व बस से जाना था और कुछ को अगले दिन जाना था। आर्यसमाज के प्रमुख विद्वानों के बड़ी संख्या में आगमन व गुरुकुल प्रेमियों की पूर्व वर्षों से भी अधिक उपस्थिति को देखते हुए वार्षिक उत्सव का आयोजन पूर्ण सफल कहा जा सकता है। इस बार अनेक पुस्तक प्रकाशक व साहित्य विक्रेता भी उत्सव में पधारे। लोगों ने उन विक्रेताओं से वैदिक साहित्य भी क्रय किया। हम मनुष्य हैं। हम प्रत्येक प्रवचन में उपस्थित नहीं रह सकते। अतः कुछ विद्वानों के प्रवचन छूट भी गये हैं। इसके लिए हम सबसे क्षमा प्रार्थी हैं। इसी के साथ हम गुरुकुल के अट्ठारवें वार्षिकोत्सव के समाचार को विराम देते हैं।

- चुक्खुवाला, देहरादून (उ.ख.)

डॉ. सुभाष वेदालङ्कार का अकस्मात् निधन

संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, विद्वान्, संस्कृत की काव्यशैली को आधुनिक विधा में पिरोकर अपनी रचनाओं से विशिष्ट ख्याति प्राप्त राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष, गुरुकुल काङ्गड़ी की परम्परा के श्रेष्ठ स्नातक, अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री विश्रुत आर्य जी के पूज्य पिता जी श्री डॉ. सुभाष वेदालङ्कार जी का दिनाङ्क ७ जुलाई २०१८ को अकस्मात् निधन हो गया। प्रभु से प्रार्थना है कि दु:ख की इस घड़ी में पारिवारिक जनों को धैर्यता प्रदान करे। 'आर्ष-ज्योति:' परिवार डॉ. सुभाष वेदालङ्कार जी को अपनी विनम्रश्रद्धाञ्जलि व्यक्त करता है।